Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

# जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 4 30 अप्रैल, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

## जन चेतना क्रांति के सूत्राधार-ताऊ देवीलाल

### 06 अप्रैल पुण्य तिथि पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

जन नायक ताऊ देवीलाल पूरे राष्ट्र में विशेष तौर से उत्तरी भारत में राजनैतिक क्रांति व जन चेतना जागृत करने के एक मात्र सुत्राधार बनकर उभरे। उनका सफरनामा अल्पायु से ही ताउम्र संघर्ष व चुनौती पूर्ण मार्ग से होकर गुजरा है। वे जाति, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठे हुए एक महान राजनीतिज्ञ और राष्ट्रवादी शख्स थे। उनका जन्म 25 सितम्बर 1914 को तत्कालीन हिसार जिला के तेजा खेड़ा गांव में हुआ। बचपन से ही राजनीति में रुचि होने के कारण चौधरी देवीलाल ने जीवन पर्यंत देश की आजादी की लड़ाई से लेकर समाज को संगठित करने के लिए संघर्ष किया।

सादगी और सरलता ही उनके जनसंचार की शैली का माध्यम था। चौधरी देवीलाल व भारत में बी.बी.सी. के मुख्य संवाददाता रहे मार्क टुली के बीच दोस्ती जग जाहिर थी। 2010 में कोलकाता में श्मास कम्युनिकेशन विषय पर आयोजितश एक कांफ्रेंस में मार्क टुली की स्पीच दी थी, जिसमें उन्होंने 15 मिनट तक चौधरी देवीलाल के जन–संचार के स्टाइल के बारे में बताया और कहा कि अगर जन–संचार की बारीकियां सीखनी हैं तो आपको चौधरी देवीलाल को पढ़ना पड़ेगा। स्पीच के बाद जब लेखक मार्क दुली से मिला तो उन्होंने चौधरी देवीलाल के साथ दोस्ती के अनेक किस्से सुनाए। चौधरी देवीलाल की जुबान में वह आकर्षण था कि लोगों की भाषा में बात करके वह सामने वाले को अपना बना लेते थे। इसी कारण चौधरी देवीलाल राजनीति और समाज सेवा की एक पूर्ण संस्था के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा रोपे गए पौधे अब वट वृक्ष बन चुके हैं और विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में उनकी विचारधारा को आगे बढ़ा रहे हैं। ऐसे महान नेता राजनीति में विरले ही मिलते हैं। चौधरी देवीलाल का दिल सदैव गरीब और कमेरे वर्ग के लिए धड़कता था। उन्होंने अपने कार्यकाल में समाज कल्याण, जन कल्याण की कईनीतियां बनाई और लागू कीं, जिनमें विशेष रूप से बुढ़ापा पेंशन शामिल थी। चौधरी देवीलाल ने 15 जून, 1987 को हरियाणा में बुजुर्गों को 100 रुपए प्रतिमाह पैंशन देने की घोषणा की। उस समय देश में हरियाणा पहला राज्य था जहां बुढ़ापा पैशन शुरू की गई थी। इसके बाद तो कई राज्यों ने, यहां तक कि भारत सरकार ने भी 15 अगस्त, 1995 को राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना की शुरूआत की।

आज हरियाणा में 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी बुजुर्गों को वृद्धावस्था सामान भत्ता के रूप में 3200 रुपए भत्ता राशि मिल रही है, जो आज देश में सर्वाधिक है। उन्होंने अपने कार्यकाल में कर्जा माफी योजना की शुरूआत की जिसके तहत सहकारी बैंकों से लिया गया किसानों, गरीबों, दलितों और मजदूरों का कर्जा माफ किया गया। इसके साथ–साथ तीन दर्जन से भी अधिक ऐसी योजनाएं लागू की गई, जिनसे प्रदेश के किसानों, युवाओं, दुकानदारों, – दलित वर्ग के लोगों को आर्थिक लाभ हुआ और उनके जीवन में नई रोशनी आई।

अपने शासनकाल में जन साधारण के लिए कल्याणकारी नतियों व राजनैतिक जागरूकता को विशेष तौर से जारी रखा और जनहित के लिए अनेकों कल्याणकारी योजनाएं – गरीब, मजदूर, किसान, दुकानदार के दस हजार रूपये तक के कर्जे माफ, किसानों को ओलावृष्टि का मुआवजा, व्यापारी भाईयों के लिए 59 वस्तुओं पर सेल्सटैक्स कम, इंसपैक्टरी राज से छुटकारा, प्रदेश के वृद्धों को सम्मान पैंशन, गांव–गांव में हरिजन चौपाल, बेरोजगार युवकों को बेरोजगारी भत्ता, किसानो को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य, सडक के किनारे खड़े वृक्षों में किसानों को आधा हिस्सा, ट्रैक्टर का टोकन टैक्स, साईकिल टैक्स, रेडियो पर लाईसैंस पूरी तौर पर समाप्त, गांव–गांव में रिंग बांध बनाकर बाढ

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

पर नियंत्रण, 24 घंटे बिजली, पानी का प्रबंध, किसानों को 6.5 एकड़ भूमि का मालियामाफ, इंटरव्यु पर जाने वाले बेरोजगार युवकों को मुत बस यात्रा, हरिजन के घर पर पहला बच्चा पैदा होने पर 300 रूपये, दूसरा बच्चा होने पर 500 रूपये की ग्रांट राशि, हरिजन लडकी की शादी के लिए सरकार द्वारा 5100 रूपये की कन्यादान सहायता राशि, खानाबदोश व घुमंतु लोगों के बच्चों द्वारा स्कूल जाने पर प्रतिदिन एक रूपया की व्यवस्था, गावों तथा शहरों में शुद्ध पीने के पानी की व्यवस्था, मार्केटिंग बोर्ड द्वारा गांव–गांव में सडकों का निर्माण, सरकारी रोजगार प्राप्त करने हेतू उम्मीदवारों की अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष से बढ़ाकर 35 वर्ष करना, काम के बदले अनाज की योजना, गांव व शहर के विकास के लिए अद्भुत मैचिंग ग्रांट योजना, पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए नंबरदारी का पद सुरक्षित करना, नई कृषि नीति की घोषणा, खुले जनता दरबार, बड़े–बड़े पांच सितारा होटलों में चौपाल की व्यवस्था आदि शुरू की जिनका आज समस्त राष्ट्र में अनुकरण किया जा रहा है, जो कि उनका ऐतिहासिक कल्याणकारी व जनक्रांति की सोच का परिणाम है। इन्ही समाज व जनकल्याणकारी योजनाओं के कारण जनता ने चौ० देवीलाल को जननायक का दर्जा दिया और वह पूरे देश में 'ताऊ' के नाम से मशहूर हुये।

समाज को राजनैतिक तौर से जागरूक करने व राजनैतिक चेतना को मजबूत करने के लिए सामाजिक तकनीकीकरण और वर्गीकरण के दो अद्भुत सामाजिक संसाधनों पर अमल करते हुए जनता के सामुहिक सहयोग से न्याय युद्ध, यातायात अवरूद्ध करने, पैदल यात्रा आदि के शांतिपूर्ण संघर्ष से प्रशासन व सरकार को जन कल्याण के प्रति जागरूक किया। चौधरी देवीलाल का लंबा राजनैतिक दौर सदैव जन कल्याण व राजनैतिक जनक्रांति के संघर्ष से परिपूर्ण रहा है और सत्ता में रहते हुए व सत्ता से बाहर भी जनता जनार्धन के सहयोग अपने इन अनुकरणीय उद्देश्यों के प्रति संघर्ष करते रहे।

हरियाणा प्रांत के निर्माण में चौ० देवीलाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अपने संघर्ष व बेहतर जनसंचार के द्वारा वे राजनीति के शिखर पूरूष बने। संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों से हरियाणा राज्य के अस्तित्व को लेकर मतभेद होने पर उनके कट्टर विरोधी बन गए व कांग्रेंस से 39 साल के राजनैतिक संघर्ष के बाद पार्टी को अलविदा कर दिया और जनता जनार्धन के बीच सामाजिक जन चेतना व राजनैतिक क्रांति लाने के लिए निकल पड़े। हरियाणा वासियों के हक के लिए जबरदस्त पैरवाई की और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी को उनकी अलग हिंदी भाषी क्षेत्र की मांग को मानना पड़ा, जिस कारण 1 नवंबर 1966 को हरियाणा प्रांत को अलग से राज्य का दर्जा दिया गया और वर्ष 1974 में रोड़ी (सिरसा) से विधायक चुने गए। वर्ष 1975 में प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी द्वारा प्रजातांत्रिक मुल्यों व जनता के राजनैनिक अधिकारों की अनदेखी कर तानाशाही रवैये के विरूद्ध राष्ट्र के कोने–कोने में जाकर सरकार की जन विरोधी नीतियों का भंडाफोड़ करके जनता में राजनैतिक जनक्रांति लाने के लिए पुरजोर संघर्ष किया और 19 मास तक गुडगांवा जेल में रहे, लेकिन अपना संघर्ष जारी रखा। उनका मानना था कि राजनैतिक अधिकार संघर्ष से मिलते हैं, मांगने से नहीं। अपने राजनैतिक दौर में हमेशा गुरू गोविंद सिंह की प्रेरणादायक वाणी "कोऊ किसी को राज ना देह है, जो लेह निज बल से लेह है" पर अमल करते हुए राजनैतिक चेतना व कल्याणकारी सोच की राजनीति के लिए संघर्ष करते रहे।

अपनी दूरदर्शी जन क्रांतिकारी राजनैतिक छवि की बदौलत वर्ष 1986 व 1987 में हरियाणा विधानसभा के निर्विरोध नेता रहे। वर्ष 1986 में कांग्रेंस की भ्रष्ट व खरीद फरोख्त की राजनीति की वजह से मुख्यमंत्री का पद छीन लिया गया लेकिन 1987 के चुनाव में भ्रष्ट राजनीतिज्ञों को करारा जबाब देकर विधानसभा की 85 सीटें जीतकर एक एतिहासिक मिशाल कायम करते हुए कांग्रेंस का सफाया किया और मुख्यमंत्री बने। ग्रामीण क्षेत्र के विकास के मुख्य स्त्रोत हरियाणा खादी बोर्ड की प्रदेश में प्रथम बार स्थापना की क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह उनकी विशेष सोच थी कि ग्राम विकास के बिना राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। उनकी एक विशेष कल्याणकारी सोच थी कि राष्ट्र के विकास व कल्याणकारी जनक्रांतिकारी

राजनैतिक व्यवस्था के लिए किसान का बेटा प्रधानमंत्री व दलित का बेटा राष्ट्रपति होना आवश्यक है। वर्ष 1987 में राजस्थाान के सीकर व हरियाणा में रोहतक से एक साथ सांसद चुने गए और देश के उप प्रधानमंत्री रहे। वर्ष 1989 में उन्होने सैंट्रल मोटर व्हीकल अधिनियम 1989 के नियम 7 के तहत प्रावधान करवाकर किसान के ट्रैक्टर गैर को ट्रांसपोर्ट व्हीकल की श्रेणी में रखवाकर हर प्रकार के कर से मुत करवाया।

राष्ट्र में नई राजनैतिक जनक्रांति लाने व जन साधारण के कल्याण हेतू कल्याणकारी व निष्पक्ष सत्ता स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री पद की पेशकश को ठुकराकर स्वर्गीय श्री वी.पी. सिंह व बाद में स्वर्गीय श्री चंद्र शेखर तत्पश्चात् देवगाड़ा को प्रधानमंत्री बनवाकर निस्वार्थ व त्याग की ऐतिहासिक मिशाल पेश की और किंगमेकर कहलाए। उनका ये मानना था कि सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं अपितु जन कल्याण को समर्पित होनी चाहिए। उन्होने ग्रामीण पृष्ठभूमि के हर वर्ग के व्यक्ति को राजनीति में प्रवेश करवाकर सभी वर्गों को एक मंच पर लाकर क्रांतिकारी राजनीति का श्री गणेश किया और उपेक्षित हो रहे किसान, कामगार, काश्तकार वर्ग को अपने हितों की पैरवाई करने के लिए राजनीति में उभरकर आने को प्रेरित किया। हरियाणा में गुहला से श्री जोगीराम, नारायणगढ से लाल सिंह गुर्जर, दलित वर्ग से बड़ौदा से डा० कृपाराम पुनिया, जुंडला से रिसाल सिंह, कलायत से श्री बनारसी दास, बवानी खेड़ा से श्री जगन्नाथ, रतिया से श्री आत्मा राम गिल, गुजरात से चिमन भाई पटेल, उत्तरप्रदेश से श्री मुलायम सिंह यादव, रामनरेश यादव, बिहार से श्री कर्पूरी ठाकुर, लालु प्रसाद यादव, आंध्रप्रदेश से श्री एन.टी. रामाराव, कर्नाटक से श्री देवगौड़ा, पंजाब से सरदार प्रकाश सिंह बादल आदि को राजनीति में सक्रिय सहयोग दिया और समस्त राष्ट्र में क्रांतिकारी राजनति की नींव रखी। उन्होने कभी भी जातिवाद, छल कपट व भेदभाव की राजनीति नहीं की। हरियाणा के इतिहास में पहली बार सैनी वर्ग के श्री मनोहर लाल को महेंद्रगढ़ से सांसद बनवाया। बाद में 1980 में कुरूक्षेत्र से उनको सांसद विजयी करवाया। श्री गुरदयाल सिंह सैनी, श्रीमति कलाशो देवी जब तक चौधरी देवीलाल के साथ रहे, कुरूक्षेत्र लोकसभा क्षेत्र से सैनी बिरादरी का प्रतिनिधित्व कायम रहा। हालांकि इस क्षेत्र के लगभग 1 लाख मतदाताओं में 4 लाख से अधिक वोटर जाट समाज से थे। इसी प्रकार करनाल लोकसभा क्षेत्र से कश्यप जाति से संबंधित उमेद सिंह को पहली बार सांसद प्रत्याशी बनाया। बाद में इंद्री हल्के से डा० अशोक कश्यप को विधायक बनवाया। उनकी स्पष्ट वादिता व निष्पक्षता का उनके विरोधी भी लोहा मानते थे। वे कहते थे कि मुझे जब भी नीचा दिखाने की कोशिश की गई, मैं अपनी असली ताकत जो भारत के ग्रामीण लोगों में निहित है, के सहयोग से अधिक ताकतवर होकर उभरा हूं। वर्ष 1979 में जब उनको मुख्यमंत्री पद को पाने में अपदस्थ किया गया तो उन्होने कहा कि एक सरमायेदार ने किसान की झोपड़ी फूंकी थी, मैनें उनके महल को आग लगा दी और श्री मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री के पद से हटाने की अह्म भूमिका निभाई। उनकी यह अह्म क्रांतिकारी सोच थी –"लोकराज लोकलाज से चलता है"।

निंसदेह यह बहुत गर्व एवं सम्मान की बात है कि चौधरी देवीलाल एक ऐसी अकाल्पनिक एवं अद्भुत प्रतिभा के स्वामी थे जिन्होने अपना संपूर्ण जीवन जनता जनार्धन के मूल अधिकारों के हित की लड़ाई के लिए समर्पित कर दिया तथा सदैव ही उनके पथ को उजागर किया और मार्गदर्शन के लिए संघर्षशील रहते थे। ऐसा करते–करते 6 अप्रैल 2001 को संघर्षशील धरतीपुत्र चौधरी देवीलाल की आत्मा पवित्र धरती में विलीन हो गई और आज आम आदमी लगातार टिकटकी लगाए अपनी गंभीर समस्याओं के समाधान के लिए किसी और धरतीपुत्र के पुनः उद्गम होने की मृगतृष्णा में है। लेखक के विचारानुसार जननायक ताऊ देवीलाल को "भारत रत्न" से सुशोभित कर किसानों, कामगारो और काश्तकारो के सम्मान को बढ़ाना चाहियें।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू



*लोगों का मुंह बंद करवाने से अच्छा है। अपने कान बंद कर लो जिन्दगी बेहतर हो जाएगी।।*

# शामली का अंग्रेज कलेक्टर मार्श

– डा. राजेन्द्र कमार, (मो० 9897821175)

ग्रामीण व्यक्ति प्रायः सरल होते हैं, और जाट किसान खास तौर से। वे मानव समाज का भला करने वाले पूर्वजों को याद रखते हैं, चाहे वे किसी भी समुदाय या जाति के हों। हमारे समाज में आदिकाल से ऐसे लोगों को याद रखा जाता है, उनकी कहानियाँ कही जाती हैं। जीवनियाँ लिखी, पढ़ी और सुनी जाती हैं और उन्हें लोकगाथाओं में शामिल कर लिया जाता है। हम अपने पूर्वजों, ऋषि–महर्षियों, राजा–महाराजाओं, वीरों, शहीदों आदि को याद करते हैं, उनके बारे में सुनते–सुनाते हैं, उन्हें अपने कहानी किस्सों में स्थान देते हैं, क्योंकि समाज में उनके बारे में जानने की उत्सुकता होती हैं जिससे हमें मार्गदर्शन मिलता है। फिर चाहे वे हमारे समाज से बाहर के क्यों न हों। शामली, मुजफ्फरनगर जिलों में प्रचलित ऐसा ही एक नाम अंग्रेज कलैक्टर मार्श है, जिसके बारे में काफी कुछ लोक गाथाओं में कहा–सुना जाता है। इस अंग्रेज अधिकारी को एक जाट महिला ने अपना दूध पिला कर पाला था और वह पिछली शताब्दी के आरम्भ में ब्रिटिश सरकार द्वारा मुजफ्फरनगर का कलैक्टर बनाया गया था। उसने ग्रामीण किसानों की बहुत सेवा की, इसलिए उसका नाम आज भी इलाके के लोग बड़े प्रेम और सम्मान के साथ लेते हैं।

उत्तर प्रदेश के शामली जिले के मुख्यालय शामली में अंग्रेज अधिकारी मार्श के नाम पर अनाज की थोक मण्डी है, जिसे "मण्डी मार्शगंज" पुकारा जाता है। हालांकि शामली के उपलब्ध दस्तावेजों में मण्डी मार्शगंज के बारे में कोई पुख्ता जानकारी नहीं मिलती। कुछ लोगों द्वारा उसे शामली स्थित विशाल चीनी मिल, अपर दोआब शुगर मिल की स्थापना से जोड़ा जाता है। उनका अनुमान है कि यह मण्डी चीनी मिल लगने के बाद स्थापित की गयी होगी। साथ ही उनका यह भी अनुमान है कि यह किसी एक व्यक्ति का प्रयास न रह कर, कई व्यापारियों का संयुक्त प्रयास रहा होगा। लेकिन इस क्षेत्र के किसानों द्वारा, जिनमें जाट समुदाय का बाहुल्य है, बताया जाता है कि इस मण्डी को शामली में, जो उस समय मुजफ्फरनगर का ही एक कस्बा था अंग्रेज अफसर एडवर्ड मार्श द्वारा स्थापित किया गया था, जो भैंसवाल गाँव का निवासी था। दरअसल कलक्टर मार्श ने 1921 में इलाके के ग्रामीण किसानों की सुविधा के लिए इस मण्डी को स्थापित कराया था जिससे किसान अपना अनाज थोक व्यापारियों को आराम से बेच सकें। मण्डी में व्यापारियों की दुकानों व गोदामों के अलावा बड़ी–बड़ी फड़ें (दालान) बनवाई गयी थीं जिन पर बैलगाड़ियों को खड़ा रखने, अनाज का डिस्प्ले करने, पशुओं को बांधने, उन्हें चारा खिलाने और, पानी पिलाने के अलावा किसानों के लेटने, बैठने और यहाँ तक कि रात भर आराम करने की व्यवस्था की गयी थी।

एडवर्ड मार्श, जिसे मुजफ्फरनगर के कलैक्टर और मजिस्ट्रेट के रूप में कई पेचीदा भूमि विवादों को हल करने और उन पर निर्णय देने के लिए जाना जाता है, को ग्रामीणों, विशेष रूप से जाटों से बहुत लगाव था। वह मुजफ्फरनगर जिले के भैंसवाल गाँव (वर्तमान में जिला शामली) में पैदा हुआ था। उसका पिता यमुना नहर विभाग में ओवरसीयर (जूनियर इंजीनियर) के पद पर काम करता था और पूर्वी यमुना नहर पर यारपुर में तैनात था, जहाँ नहर पर एक झाल थी और टरबाइन से चलने वाला कारखाना था। पहले वहीं पनचक्की भी थी, जिसे 1857 में स्वाधीनता सेनानियों ने इस अफवाह के चलते नष्ट कर दिया था कि अंग्रेज ईसाई लोग भारतीयों का धर्म भ्रष्ट करने के लिए पनचक्कियों में आटे में हड्डी के चूरे की मिलावट करते हैं। ओवरसीयर मार्श को भैंसवाल गांव (जो यारपुर से पाँच मील दूर था) के चौधरी ने रहने के लिए एक मकान दे दिया था, इसलिए वह सपरिवार भैंसवाल में ही रहता था। ओवरसीयर मार्श को भैंसवाल गाँव का माहौल इस कदर पसंद आया कि उसने भैंसवाल में ही अपने निवास के लिए एक विशाल भवन बनवाया, जिसे मार्श की कोठी कहा जाता है, और उसमें ही रहना शुरु कर दिया। यह कोठी अब भी खण्डहर के रूप में विद्यमान है। इसी भवन में ओवरसीयर की पत्नी ने बेटे एडवर्ड को जन्म दिया था, जो बाद में कलक्टर बना। कहा जाता है कि उसके जन्म के बाद उसकी माँ का दूध नहीं उत्तरा था, जिससे उसका जीवन बच्चाना कठिन हो गया था। ऐसे में भैंसवाल की एक जाट–महिला आगे आई और उसने बच्चे को अपना दूध पिलाया। ओवरसीयर मार्श और उसकी पत्नी स्वयं को उस महिला का जीवनभर ऋणी मानते रहे। एडवर्ड मार्श सदैव उस महिला को अपनी माँ की तरह सम्मान देता था।

उस जमाने में भैंसवाल पूर्वी यमुना नहर के दाहिने किनारे पर शामली सहारनपुर मुख्य मार्ग से कुछ हटकर एक छोटी नहर की कच्ची पटरियों से जुड़ा हुआ, इलाके का बड़ा

और जाटों का सुविधा सम्पन्न गाँव था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के दिनों में यहाँ ब्रिटिश चौकी और सिंचाई विभाग का निरीक्षण बंगला था. जिसमें सिंचाई विभाग का त्तारघर भी था। जुलाई 1857 के मध्य में भैंसवाल के चौधरी भवानी सिंह के नेतृत्व में स्वाधीनता सेनानियों ने चौकी पर हमला कर दिया, गार्ड को मार दिया, तारघर नष्ट कर दिया और खजाने को लूट लिया। यह स्थान अंग्रेजी सेना की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए सुरक्षित था, इसलिए शामली के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बौधरी मोहर सिंह के कहने पर उन्होंने निरीक्षण बंगले पर कब्जा कर लिया और उसे बादशाही चौकी का नाम दे दिया।

एडवर्ड मार्श 1919 में जब मुजफ्फरनगर जिले का कलक्टर बन कर आया तो उसने अपने आवासीय भवन को और भव्यता प्रदान की। उसके परिवार को प्राकृतिक परिवेश से विशेष लगाव था, और भैंसवाल तो उनका श्अपना ही गाँव था। उसने वहाँ भारी मात्रा में छायादार वृक्ष लगवाये जो आज भी मौजूद हैं। कलक्टर मार्श अवसर मिलते ही मुजफ्फरनगर से सपरिवार घोडागाड़ी पर भैंसवाल आता था और अपने बंगले में ठहरता था।

बाद में भी भैंसवाल क्रान्तिकारी देशभक्तों का ठिकाना रहा। यहाँ स्थित नार्श की कोठी तो स्वतंत्रता सेनानियों का निशाना रहती ही थी, जिसके सामने उनके विरोध प्रदर्शन होते थे। प्रदर्शन के बाद आसपास और चारों ओर लगे हुए घने वृक्षों के नीचे आजादी के दीवाने कुछ देर बैठकर सुस्ताते और आंदोलन की आगामी रूपरेखा बनाते थे।

दैनिक जागरण के सोमवार, 9 अगस्त 2021 के अंक में प्रकाशित समाचार में कहा गया था– "आजादी के बाद से ही हर साल स्वतंत्रता की प्रत्येक वर्षगांठ पर गाँव के कुछ लोग नहर किनारे वृक्षों की छांव में एकत्रित होकर आजादी के लमहों को याद करते हैं। घनी आबादी वाले इस गांव में स्वतंत्रता दिवस का पर्व नये उत्साह व उमंग लेकर आता है। इस एक दिन के लिए बुजुर्गों व महिलाओं से लेकर बच्चा–बच्चा मार्श की कोठी पर पहुंचकर पुराने पेड़ों की छांव में सिमट जाते है। गाँव के लोगों का कहना है कि बार–बार माँग किये जाने के बावजूद प्रशासन ने मार्श की कोती व यहाँ के पेड़ों को सुरक्षित रखने के कोई इंतजाम नहीं किये हैं। कोठी के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए साल 2016 में राज्य योजना आयोग के सदस्य रहते हुए प्रोफेसर सुधीर पंवार ने तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को इसके महत्व से रूबरू कराया था। तत्कालीन सरकार ने कोठी की मरम्मत्त के लिए 98 लाख रुपये स्वीकृत किए। जनवरी 2017 में 44.50 लाख की पहली किश्त जारी हो गयी थी। सिंचाई विभाग ने चारदीवारी का निर्माण करा दिया था लेकिन बाद में सरकार बदलने के बाद सालों से इस पर काम बन्द है।"

# है वक्त बहुत थोड़ा

– रामचन्द्र पन्नू (मो० 9467743048)

है वक्त बहुत थोड़ा, अरमान ज्यादा हैं,
इक वक्त दिल को लुभाने के, सामान ज्यादा हैं
हर इक को गुमां है ये, अफजल है वहीं सबसे
इन्सानों की दुनियां में, भगवान ज्यादा हैं,
है वक्त बहुत थोड़ा ............।
ये सोच के कश्ती से, ना बाहार निकल जाना,
मांझी तो अकेला है, तूफान ज्यादा है,
है वक्त बहुत थोड़ा ............।
इन्सान बहुत कम हैं, इस दुनियां–ए–फानी में,
आंखों को भ्रम यह है, इन्सान ज्यादा हैं,
है वक्त बहुत थोड़ा ............।
कैसे ही शफा हासिल, अब पा के दवा 'रोशन'
बिमान तो हम कम हैं, लुकमान ज्यादा हैं।
है वक्त बहुत थोड़ा, अरमान ज्यादा हैं।

# नई संसद

– सुखदीप सांगवान

स्कूली छात्र शत्–प्रतिशत अंक ले रहे हैं,
इक्के–दुक्के बच्चे ही अब फेल हो रहे हैं,
चिंता का विषय है बच्चों की ये सफलता,
इसीलिए देश का भविष्य दिख रहा है 'बिखरता',
सुना है 'देश–हित' में संसद की संख्या बढ़ाएंगे,
पर बच्चे 'फेल' ना हुए तो नेता कहाँ से लाएँगे,
फिर नई संसद के लिए सांसद किसे बनाएंगे,
'अनपढ़–रूपी' योग्यता वाले मंत्री भी नहीं मिल पाएंगे,
हे शिक्षक गण कुछ देश हित की चिन्ता करो,
अच्छे परिणाम ना आयें ऐसे भी प्रयास करो,
तभी तो 'असफल' बच्चे सामने आयेंगे,
और हमें 'उज्जवल भविष्य' के सपने दिखाएंगे।



*अगर परेशान रहते हो तो पक्का है, कि जीवन जीने के तरीकों में कोई भूल है।*

# भक्त शिरोमणि 'धन्ना जाट' का जीवन परिचय

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)
(मो० 9466110050)

धन्ना भक्त की जन्मस्थली राजस्थान के जयपुर जिले में फागी तहसील के चौरू गाँव में वैशाख बदी तृतीया संवत् 1472 (1415 ईस्वी) में हरितवाल गोत्र के जाट परिवार में हुआ। धन्ना भक्त के पिता का नाम रामेश्वर जाट गोत्र हरितवाल व माता का नाम गंगा बाई, गोत्र गढ़वाल है। बचपन में ही धन्ना भक्त के पिता चौरू (फागी) को छोड़कर अभयनगर जाकर रहने लगे जिससे वर्तमान में धन्ना भक्त की कर्मस्थली धुआँ कला जिला टोंक (राजस्थान) के नाम से जाना जाता है। धन्ना भक्त के माता पिता कृषि और पशु पालन करके अपना जीवनयापन करते थे। परिवार बहुत निर्धन था जैसे ही धन्ना भक्त बड़े हुए तो उन्हे भी किसानी व पशुपालन मे लगा दिया गया। धन्ना भक्त रोज पशु चराने के साथ–साथ खेतीबाड़ी का भी काम करते थे।

जयपुर जिले के चौरू (फागी) गाँव के बाहर ही कच्चे तालाब के किनारे एक ठाकुरद्वारा था। जिसमें बहुत सारी भगवान की मूर्तियाँ रखी हुई थी। लोग प्रतिदिन वहाँ आकर माथा टेकते व भेंट अर्पण करते, धन्ना भक्त पंडित को भगवान की पूजा करते, स्नान करवाते व घंटियाँ खड़काते रोज देखते थे। किशोरावस्था होने के कारण वह समझ नहीं पाते। एक दिन उसके मन में आया और पंडित जी से पूछ ही लिया कि आप मूर्तियों के आगे बैठकर आप क्या करते हो ? पंडित ने कहा भगवान की सेवा करते हैं जिससे कि मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं धन्ना भक्त ने कहा, यह भगवान मुझे भी दे दो उससे छुटकारा पाने के लिए पंडित ने कपड़े में पत्थर लपेटकर धन्ना को दे दिया।

घर जाकर धन्ना भक्त ने पत्थर को भगवान समझकर स्नान कराया और भोग लगाने के लिए कहने लगे। उन्होनें भगवान के आगे बहुत मिन्नते की, धन्ना भक्त ने कसम खाई कि यदि भगवान जी आप नहीं खायेंगे तो मैं भी भूखा ही रहूंगा उसका यह प्रण, त्याग और समर्पण देखकर प्रभु प्रगट हुए तथा रोटी खाई व लस्सी पी, इस प्रकार धन्ना भक्त ने अपने भोलेपन में पूजा करने और साफ मन से पत्थर में भी भगवान को पा लिया।

जब धन्ना भक्त को लगने लगा कि उसके माता–पिता बूढ़े हो चुके है और वह अकेला नवयुवक था। उसे ख्याल आया कि भगवान को पूजा से खुश करके यदि सब कुछ हासिल किया जा सकता है तो उसे अवश्य ही यह करना होगा जिससे घर की गरीबी चली जाए तथा सुख की साँस आए ऐसा सोच कर ही वह पंडित के पास गये। पंडित ने पहले भगवान की मूर्ति देने से मना कर दिया कि जाट को पूजा पाठ का ज्यादा ज्ञान नहीं होता कि वह भगवान की पूजा कर सके, दूसरा तुम अनपढ़ हो, तीसरा भगवान जी मन्दिर के बिना कही नहीं रहते और न ही प्रसन्न होते इसलिए तुम जिद्द मत करो और खेतों की संभाल करो। ब्राह्मण का धर्म है पूजा पाठ करना जाट का कार्य है खेती किसानी व अनाज पैदा कर सबका पेट भरना लेकिन धन्ना टस से मस न हुआ। धन्ना भक्त की कद–काठी व लम्बा चौड़ा शरीर देख कर पंडित जी में भय व्याप्त हो गया। इस कारण पंडित ने जो सालगराम मन्दिर में फालतू रखा था उसे उठाकर धन्ना भक्त को दे दिया और पूजा–पाठ की विधि भी बता दी। पूरी रात धन्ना भक्त को नींद नहीं आई, वह पूरी रात सोचता रहा कि भगवान को कैसे प्रसन्न करेगा और उनसे क्या माँगेगा ? सुबह उठकर अपने नहाने के बाद भगवान को स्नान कराया। भक्ति भाव से बैठकर लस्सी, खिचड़ी व रोटी पकाई। उसने प्रार्थना की, हे प्रभु ! भोग खाओं। मुझ गरीब के पास रोटी, खिचड़ी और मक्खन ही है और कुछ नहीं। जब और चीजे दोगे तब आपके आगे रख दूँगा। वह बैठा–बैठा भगवान जी को देखता रहा। अब पत्थर भोजन कैसे करे ? पंडित तो भोग का बहाना लगाकर सारी सामग्री घर ले जाता था पर भोले बालक धन्ना भक्त को इस बात का कहाँ ज्ञान था। वह व्याकुल होकर कहने लगा कि क्या आप जाट का प्रसाद नहीं खाते ? दादा तो इतनी देर नहीं लगाते थे। यदि आज आपने प्रसाद न खाया तो मैं मर जाऊंगा लेकिन आपके बगैर नहीं खाऊंगा। प्रभु जानते थे कि यह मेरा निर्मल भक्त है। छल–कपट नहीं जानता। अब तो प्रगट होना ही पड़ेगा। एक घंटा और बीतने के बाद धन्ना भक्त देखता है कि श्री कृष्ण रूप भगवान जी रोटी मक्खन के साथ खा रहे हैं और लस्सी पी रहें हैं। भोजन खा कर प्रभु बोले धन्ना जो इच्छा है मांग लो मैं तुम पर



*अनुभव उम्र से नहीं, परिस्थितियों का सामना करने से आते हैं।*

प्रसन्न हूँ। धन्ना भक्त ने हाथ जोड़कर विनती की भगवान जो तुम्हारी भक्ति करते हैं तू उनके कार्य संवार देते हो मुझे गेंहू दाल व घी दीजिए। यदि जूता, कपड़े, सात प्रकार के अनाज, गाय या भैंस, सवारी करने के लिए घोड़ी तथा घर की देखभाल करने के लिए सुन्दर नारी मुझे दे दो।

धन्ना भक्त के यह वचन सुनकर प्रभु हँस पड़े और बोले यह सब वस्तुएं तुम्हें मिल जाएँगी।

प्रभु बोले – और कुछ ?

धन्ना भक्त बोले –प्रभु ! मैं जब भी आपको याद करूं आप दर्शन दीजिए, यदि कोई जरुरत हुई तो फिर बताऊंगा।

भगवान ने उत्तर दिया – तथास्तु !

हे प्रभु ! धन्ना आज से आपका आजीवन सेवक हुआ। आपके अलावा किसी अन्य का नाम नहीं लूँगा। धन्ना भक्त खुशी से प्रफुल्लित हो गया। उसको नींद आ गई और जब आँखें खुली तो प्रभु वहाँ नहीं थे। वह पत्थर का सालगराम वहाँ पड़ा था। उसने बर्तन में बचा हुआ प्रसाद खाया जिससे उसे तीनों लोको का ज्ञान हो गया।

प्रभु के दर्शनों के कुछ दिन पश्चात् धन्ना भक्त के घर सारी खुशियाँ आ गई। एक अच्छे अमीर घर में उसका विवाह हो गया, उसकी बिना बोई भूमि पर भी फसल लहलहा गई। उन्होने जो–जो प्रभु से माँगा था उन्हे सब मिल गया।

किसी ने धन्ना भक्त को कहा चाहे प्रभु तुम पर प्रसन्न हैं फिर भी तुम्हे गुरु धारण करना चाहिए। उसने स्वामी रामानंद जी का नाम बताया। एक दिन अचानक ही स्वामी रामानंद जी उधर से निकले। धन्ना भक्त ने दिल से उनकी खूब सेवा की तथा दीक्षा की मांग की। स्वामी रामानंद जी ने उनकी विनती स्वीकार कर ली और दीक्षा देकर धन्ना भक्त को अपना शिष्य बना लिया। धन्ना भक्त राम नाम का सिमरन करने लगा। धन्ना भक्त कई बार जब दुःखी और परेशान होता तो भगवान को अपने पास बुला लेता और उनसे अपने दुःख–दर्द साझा करता और भगवान धन्ना भक्त के सारे दुःख–दर्द दूर कर देते थे।

इतिहास में धन्ना भक्त को भक्त शिरोमणी धन्ना जाट के नाम से जाना जाने लगा।

# चौधरीसेठछाज्जूराम लाम्बा को उनकी जयंती पर समस्त जाट समाज की और से शत शत नमन

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

चौधरी सेठ छाज्जूराम लाम्बा नही होते तो
हमारे बीच चौधरी सर छोटूराम जी जैसा विरला ना होता।

<u>भूमिका</u>

कुछ लोग इतिहास लिखते हैं, कुछ इतिहास बनाते हैं और कुछ लोग स्वंय इतिहास बन जाते हैं। समय का चक्र हमेशा अविरल गति से घूमता रहता है। युग बदलते हैं, तारीखें बदलती हैं और इसके साथ ही बदल जाता है मानव का दृष्टिकोण। लेकिन कुछ विरले लोग ऐसे भी होते हैं, जो एक युगपुरुष के रूप में याद किये जाते हैं क्योंकि युगों–युगों तक आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरणा पाती हैं। जो खुले आसमान में किसी आकाशदीप की तरह सदा जगमगाते रहते हैं और पूरे संसार को अपनी आभा से आलोकित करते हैं।

एक ऐसे ही युगपुरुष थे चौधरी सेठ छाजूराम लाम्बा, जिन्हें एक और भामाशाह/क्षत्रियों का भामाशाह कहा जाता है। फर्श से उठकर अर्श तक पहुँचने वाला यह महामानव जहां दानवीरता के क्षेत्र में सूरज–चाँद की तरह जगमगाया, वहीं दुखी मानवता के आँसू पोंछने के लिए इसने अपना सर्वस्व अर्पित करने से भी परहेज नहीं किया।

<u>भामाशाहों के भामाशाह दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम</u>

चौधरी छोटूराम के धर्म पिता तुम, उनका फरिश्ता–ए–रोशनाई थे, हरियाणा के तीन लालों की तरह, इसके तीन रामों के रहनुमाई थे। भामाशाहों के भामाशाह दानवीर सेठ छाजूराम, आप गजब शाही थे, जब उदय हो चले अलखपुरा से, जा छाये आसमान–ए–कलकत्ताई थे। जी. डी. बिड़ला, लाला लाजपतराय रहे किरायेदार, जो इन्सां जुनुनाई थे, कलकत्ते के सबसे बड़े शेयरहोल्डर आप, साहूकारों के अगवाही थे। भगत सिंह को मिली पनाह जिनके यहाँ, वो खुदा–ए–रहबराई थे, नेताजी सुभाष को दी आर्थिक सहायता, जर्मनी की राह लगाई थे।।

दानवीरता की टंकार हुई ऐसी कई भामाशाह अकेले में समाई थे, बाढ़–अकाल–बीमारी–लाचारी–गरीबी में दिए जनता बीच दिखाई थे। लाहौर से कलकत्ता तक, शिक्षा के मंदिरों की दिए लाइन लगाई थे, कौम का इतिहास लिखवाया कानूनगो से, गजब आशिक–ए–कौमाई थे।

तेरे जूनून–ए–इंसानी–भलाई का, यह फुल्ले भगत हुआ दीवाना, वो जज्बा तो बता दे, जो धार दुःख देश–कौम के मिटा पाई रे? सेठों–के–सेठ ओ भारत–देश की शान, किसके दूध की अंगड़ाई थे? जिंदगी राह लग जाए, तुझसे रोशनी ऐसी पाई ओ दादी माई के। 'हरियाणा में तीन लालों की तरह तीन राम भी हुए थे, जिनमें से एक थे, देश के महान परोपकारी सेठ, शिक्षित, समाज सेवक, दानवीर, देशभक्त चौधरी छाज्जूराम हरियाणा में ही नहीं, बल्कि भारतवर्ष में भी अपनी एक विशेष पहचान रखते है। जहाँ आधुनिक हरियाणा में तीन लाल (देवीलाल, बंसीलाल, भजनलाल) हुए और हरियाणा एवं देश को एक नई राह दिखाईय वहीं एक समय ऐसा भी था जब तीन राम (छाज्जूराम, छोटूराम, नेकीराम) जैसे महान पुरुषों ने समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, वो भी उस समय जब लोगो को कोई भी आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी या यूँ कह लीजिये कि उनकी आशाओं का सूरज पूरी तरह से अस्त हो चुका था। इस अंधकारमयी समाज में उजाला लाने एवं अंधकार को दूर करने और लोगो में नई तरह की आश जगाने का काम इन तीन महापुरुषों ने किया। और ऐसी भूमिका निभाने वाले इन तीनों में से एक और सबसे अग्रणी थे श्रद्धेय चौधरी सेठ छाजूराम जी। इन्होने जो योगदान समाज में दिया उसी का अमिट योगदान है कि आज हम एक स्वच्छ वातावरण में रह रहे है।

सेठ छाज्जूराम का जन्म 27 नवंबर 1865 (अधिकतर जगह 1861 लिखा हुआ है, जबकि हमारे विश्वसनीय शोधकर्ता 1865 बताते हैं) को आधुनिक जिला भिवानी, तहसील बवानीखेड़ा के अलखपुरा गाँव में लाम्बा गोत्र के जाट कुल परिवार में चौधरी सालिगराम जी के यहां हुआ। इनका बचपन अभावों, संघर्षों, और विपत्तियों में व्यतीत हुआ, लेकिन अपनी लगन, परिश्रम और दृढ़ निश्चय से सफलता के शिखर तक पहुंचे। इनके पिता सालिगराम जी एक साधारण किसान थे। चौधरी छाज्जूराम के पूर्वज झुंझनू (राजस्थान) के निकटवर्ती गाँव लाम्बा गोठड़ा से आकर भिवानी जिले के ढाणी माहू गाँव में बस थे। इनके दादा मनीराम ढाणी माहू को छोड़ कर सिरसा जा बसे। लेकिन कुछ दिनों के बाद इनके पिता जी चौधरी सालिगराम अलखपुरा आकर बस गए (याद रहे इस समय गाँव अलखपुरा, हांसी जागीर में आता था और इस समय हांसी जागीर जेम्स स्किनर के बेटे अलेक्जेंडर को दे दी गयी थी। इसी के नाम पर गाँव का नाम अलेक्सपुरा पड़ा, गाँव वालों ने मौखिक रूप में फिर इसको अलखपुरा कहा तो, गाँव का नाम अलखपुरा पड़ा)।

चौधरी का प्रथम विवाह बचपन में सांगवान खाप के हरिया डोहका गाँव में कड़वासरा खंडन की दाखांदेवी के साथ हुआ था। लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही इनकी पत्नी का हैजे की बीमारी से देहांत हो गया। आपका दूसरा विवाह वर्ष 1890 (कुछ प्रारूपों में यह वर्ष 1900 भी बताया गया है।) में भिवानी जिले के ही बिलावल गाँव में रांगी गोत्र की दाखांदेवी नाम की ही लड़की से हुआ। लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर लक्ष्मीदेवी रख दिया गया। माता लक्ष्मी देवी एक नेक, पतिव्रता व संस्कारित स्त्री थी। कालांतर में उन्होंने आठ संतानों को जन्म दिया, जिनमें पांच पुत्र व तीन पुत्रियां हुई, लेकिन चार संतानें बाल्यावस्था में ही ईश्वर को प्यारी हो गई। बड़े बेटे सज्जन कुमार का युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। अन्य दो बेटे महेंद्र कुमार व प्रद्युमन थे। इनकी बेटी सावित्री देवी थी जो मेरठ निवासी डॉ. नौनिहाल से ब्याही गई थी।

सेठ छाज्जूराम की शिक्षा में बचपन से ही रूचि रही इसी रूचि को लेकर आर्थिक स्थिति अच्छी न रहने के बावजूद भी अपनी प्रारम्भिक शिक्षा (1877) बवानीखेड़ा के स्कूल से प्राप्त की। चौधरी साहब गाँव से ग्यारह किलोमीटर दूर बवानीखेड़ा के प्राइमरी स्कूल में पैदल पढ़ने जाते थे। परन्तु जैसा कि होनहार बिरवान के होत चिकने पात, ऐसे ही आपने रोज की इतना पैदल चलने की चुनौती को पार किया अपितु जब पांचवीं कक्षा का बोर्ड का परिणाम आया तो न केवल अपनी परीक्षा में प्रथम अपितु प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। मिडल शिक्षा (1880) भिवानी से पास करने के बाद उन्होंने रेवाड़ी से मैट्रिक की परीक्षा (1882) में पास की। मेधावी छात्र होने के कारण इनको छात्रवृतियां भी मिलती रही लेकिन परिवार की स्तिथि अच्छी न होने के कारण आगे की पढ़ाई न कर पाये।

आपने मैट्रिक संस्कृत, अंग्रेजी, महाजनी, हिंदी, उर्दू और गणित विषयों से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। इस दौरान अपनी पढाई और स्वंय का खर्च चलाने हेतु आप दूसरे बच्चों को ट्यूशन भी देते रहे। धन अभाव के कारण एक बंगाली इंजीनियर एस. अन. रॉय के बच्चों को एक रूपये प्रति माह के हिसाब से ट्यूशन पढ़ाने लग गए। जब रॉय साहब कलकत्ता चले गए तो छाज्जूराम को भी उन्होंने कलकत्ता बुला लिया। पैसे के अभाव में वो कलकत्ता नहीं जा सकते थे, लेकिन फिर भी जैसे–तैसे करके उन्होंने किराये का जुगाड़ किया और कलकत्ता चले गए। उन्होंने वहां भी उसी प्रकार बच्चों को

पढ़ाना शुरू कर दिया। यहाँ पर उनको छः रु० प्रति माह मिलते थे। लेकिन यहां कड़ा संघर्ष यहां आपका इंतजार कर रहा था। नए लोग, नए–नए काम, न रहने का ठिकाना, न खाने का पता। तंग आकर घर वापिस जाने का फैसला किया, लेकिन फिर किराए की समस्या सामने आ गई। व फूट–फूट कर रो पड़े और मन को मारकर मूलरूप से भिवानी निवासी रायबहादुर नरसिंह दास से मुलाकात की तथा घर जाने के लिए किराया उधार माँगा। नरसिंह दास ने उन्हें हौंसला दिया और कलकत्ता में ही रहकर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि कलकत्ता ऐसा शहर है, जहाँ न जाने कितने ही लोग खाली हाथ आये और अपनी मेहनत और संघर्ष की बदौलत बादशाह बन गए। और इस तरह शुरू हुआ सफर उनको उनके जमाने के देश के सबसे बड़े रहीशों में शामिल हो गया।

अब आपका सम्पर्क मारवाड़ी सेठों से हुआ, जिन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान कम था लेकिन छाज्जूराम को अंग्रेजी भाषा का व्यापक ज्ञान था तो आपने पत्र लिखने और भेजने का काम छाज्जूराम ने शुरू कर दिया, जिस पर सेठों ने इनको मेहनताना देना शुरू कर दिया। इसी दौरान देखते ही देखते व्यापारी– पत्र–व्यवहार के कारण इनको व्यापार का ज्ञान हो गया एवं व्यापार सम्बन्धी कुछ गुर भी सीख लिए जिसके कारण उनको इन्हीं गुरो ने महान व्यापारी बना दिया। कुछ समय बाद आपने बारदाना (पुरानी बोरियों) का व्यापार शुरू कर दिया। यही व्यापार उनके लिए वरदान साबित हुआ और उनको 'जूट–किंग' (हेसियन का राजा) बना दिया। धीरे–धीरे कलकत्ता में उन्होंने शेयर भी खरीदने शुरू कर दिए। एक समय आया जब वो कलकत्ता की 24 बड़ी विदेशी कम्पनियो के शेयरहोल्डर थे और कुछ समय बाद 12 कम्पनियो के निदेशक भी बन गए, उस समय इन कम्पनियो से 16 लाख रूपये प्रति माह लाभांश प्राप्त हो रहा था। और सेठ जी उस जमाने के कलकत्ता के सबसे बड़े शेयरहोल्डर थे।

इसीलिए पंजाब नेशनल बैंक ने उनको अपना निदेशक रख लिया लेकिन काम की अधिकता होने के कारण उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। एक समय आया जब उनकी सम्पति 40 मिलियन को पार कर गयी थी। एक समय था जब छाज्जूराम के पास एक छतरी को खघ्रीदने के लिए पैसे नहीं थे परन्तु अब उनकी गिनती देश के शिखर के सेठो में की जाने लगी थी। आपने 21 कोठी कलकत्ता में (14 अलीपुर, 7 बारा बाजार) में बनवायी। जी. डी. बिरला व पंजाब केशरी लाला लाजपतराय भी चौधरी छाज्जूराम जी के किरायेदार रहे। आपने एक महलनुमा कोठी अलखपुरा में व एक शेखपुरा (हांसी) में बनवायी। आपने हरियाणा के पांच गाँव भी खरीदे तथा भिवानी, हिसार और बवानीखेड़ा के शेखपुरा, अलीपुरा, अलखपुरा, कुम्हारों की ढाणी, कागसर, जामणी, खांडाखेड़ी व मोठ आदि गाँवों 1600 बीघा जमीन भी खरीदी। आपके पंजाब के खन्ना में रुई तथा मुगफली के तेल निकलवाने के कारखाने भी थे। उस जमाने में रोल्स–रॉयस कार केवल कुछ राजाओं के पास होती थी, लेकिन यह कार आपके बड़े बेटे सज्जन कुमार के पास भी थी।

जूट किंग बनने एक बाद तो चौधरी साहब की हर जगह धूम मची, वो जिस भी कारोबार में हाथ डालते, वही चल निकलता। लेकिन इस सफलता दरम्यान आपने जिंदगी का जातिपाती और नश्लभेद का भी दंश झेलना पड़ा। क्योंकि अनेक व्यापारी उनकी जाति के कारण उनसे दोयम दर्जे का व्यवहार करते थे। एक ब्राह्मण ने तो उन्हें अपने ढाबे पे खाना खिलाने से ही इंकार कर दिया। वे समझते थे कि व्यापार पर महाजनों का अधिकार है। एक जाट क्षत्री युवक व्यापार पर कब्जा करे, यह उनसे सहन नहीं होता था। उन्होंने चौधरी छाजूराम को असफल करने के अनेक कुचक्र रचे, लेकिन असफल रहे।

इतना बड़ा कारोबार और धन–धान्य का साम्राज्य खड़ा होने पर भी, क्या मजाल जो चौधरी साहब को घमंड छू के भी निकल सका हो। उन्होंने इस धन से जनकल्याण के काम करवाने शुरू कर दिए। उन्होंने जगह–जगह शिक्षण संस्थाएं खुलवाई, पानी के लिए कुँए और बावड़ियां खुलवाई, पथिकों और यात्रियों के लिए धर्मशालाओं आदि का निर्माण करवाया। उनका कहना था। मैं जितना दान देता हूँ, ईश्वर मुझे ब्याज सहित लौटा देता है। उनके दान की राशि और लिस्ट बहुत लम्बी है। देश की अधिकांश शिक्षण संस्थाओं को उन्होंने जहाँ जी खोलकर दान दिया, वहीं उन द्वारा बनाई गई अनेक इमारतें और भवन आज भी उनकी दानवीरता के स्तंभ बने खड़े हैं।

रहबरे–आजम चौधरी छोटूराम के वो धर्म–पिता थे। आपने रोहतक में चौ. छोटूराम के लिए नीली कोठी का निर्माण भी करवाया (याद रहे चौ. छोटूराम जी को उच्च शिक्षा का खर्च वहन करने वाले चौ. छाज्जूराम ही थे)। कहा जाता है कि अगर चौ. छाज्जूराम जी नहीं होते तो चौ. छोटूराम जी भी नहीं होते और अगर चौ. छोटूराम नहीं होते तो किसानो के पास आज भूमि नहीं होती।

सेठ छाज्जूराम की दानदक्षता उस समय भारत में अग्रणीय थी। कलकत्ता में रविंद्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन

से लेकर लाहौर के डी. ए. वी. कॉलेज तक कोई ऐसी संस्था नहीं थी, जहाँ पर उन्होंने दान न दिया हो। सेठ साहब ने शिक्षा के लिए लाखों रूपये के दान दिए, फिर वह चाहे हिन्दू विश्वविधालय बनारस हो, गुरुकुल कांगड़ी हो, हिसार–रोहतक (हरियाणा) व संगरिया (राजस्थान) की जाट संस्थाए हों, हिसार और कलकत्ता की आर्य कन्या पाठशालाएं हों, हिसार का डी ए वी स्कूल हो अथवा अलखपुरा और खांडा खेड़ी के ग्रामीण स्कूल, हर जगह अपार दान दिया। इसके अलावा इंद्रप्रस्थ महिला महावि।ालय दिल्ली, डी ए वी कॉलेज लाहौर, शांति निकेतन, विश्व भारती में भी बार–बार दान दिए। आपने गरीब, असमर्थ व होनहार बच्चों के लिए स्कालरशिप प्लान निकाले, जिसके तहत वो सैंकड़ों बच्चों की शिक्षा स्पांसर करते थे।

सन 1928–29 के अकालों में, 1908–09 में प्लेग और 1918 के इन्फ्लुएन्जा की महामारियों में, 1914 की दामोदर घाटी की भयंकर बाढ़ में दोनों हाथों से धन लुटाकर मानवता को महाविनाश से बचाया। उन्होंने भिवानी में अनेक परोपकारी कार्य किये उन्होंने 'लेडी–हेली' नामक हस्पताल का निर्माण पांच लाख रूपये से अपनी बेटी कमला की याद में (1928) करवाय (आज उसी जगह पर आज चौ. बंसीलाल हस्पताल है)। भिवानी में उन्होंने एक अनाथालय बनवाया, यहीं पर उन्होंने एक गौशाला का निर्माण भी करवाया। अलखपुरा में उन्होंने कुए एवं धर्मशाला भी बनवाई। वे विशुद्ध आर्य समाजी थे इसलिए उन्होंने आर्य समाज मंदिर कलकत्ता के बनवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चौधरी छाजूराम ने जाट इतिहास के विख्यात लेखक कलिका रंजन कानूनगो द्वारा 1925 में लिखे गए जाट इतिहास की खोज व लेखन का खर्च भी खुद वहन किया। जिससे उनका अपनी कौम के प्रति फर्ज, जागरूकता और दूरदर्शिता भरा प्रेम भी जाहिर होता है।

सेठ छाज्जूराम दान–दाता ही नहीं थे बल्कि वो उच्चकोटि के देशभक्त भी थे। उनकी आँखों में भी भारत की आजादी का सपना था। वो भी भारत को आजाद देखना चाहते थे। जब 17 दिसम्बर, 1928 को सरदार भगतसिंह ने अंग्रेज अधिकारी सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी तो वो भाभी दुर्गा व उनके पुत्र को साथ लेकर पुलिस की आँखों में धूल झोंकते हुए रेलगाड़ी से लाहौर से कलकत्ता पहुंचे, और कलकत्ता में वे सेठ छाज्जूराम की कोठी पर पहुंचे और सेठ साहिब की धर्मपत्नी वीरांगना लक्ष्मी देवी जी ने उनका स्वागत किया। यहाँ भगत सिंह लगभग ढ़ाई महीने तक रहे, जिसकी कि उस समय कल्पना करना भी संभव नहीं था, लेकिन सेठ जी के देशप्रेम के कारण यह सम्भव हो पाया। उन्होंने देश की आजादी में सबसे भरी आर्थिक सहयोग दिया। वे कहा करते थे कि देश को आजाद करवाने में चाहे उनकी पूरी सम्पति लग जाए, लेकिन देश आजाद होना चाहिए और अपने हाथों से भोजन बनाकर खिलाया। पंडित मोतीलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी द्वारा मनोनीत कांग्रेस अध्यक्ष सीताभिपट्टाभिमैया सहित न जाने कितने ही नेताओं और क्रांतिकारियों को देश की आजादी के लिए भी चंदा दिया। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जब जर्मनी जा रहे थे तो उन्होंने भी चौधरी छाजूराम जी से आर्थिक सहायता ली थी। सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी चौधरी छाजूराम जी ने एक लम्बी लड़ाई लड़ी। बाल–विवाह व अशिक्षा के वो घोर विरोधी थे।

उनका मन कभी भी राजनीति में नहीं लगा, लेकिन फिर भी चौ. छोटूराम के कहने पर संयुक्त पंजाब में सं 1927 में एम. अल. सी. भी रहे।

चौधरी छाजूराम के बड़े पुत्र सज्जन कुमार बहुत ही होनहार व व्यवहार कुशल थे। वहीं वो चौधरी साहब का व्यापार संभालने में भी माहिर थे, लेकिन 27 सितंबर 1937 को जब उनकी अकस्मात मौत हुई तो इस हादसे ने चौधरी साहब को अंदर से तोड़ दिया। लगता था कि वो वक्त से पहले ही बूढ़े हो गए थे। और फिर 7 अप्रैल 1943 को आप महान आत्मा संसार को छोड़, भगवान के दरबार को प्रस्थान कर गए। माना जाता है कि सेठ जी और उनके पुत्र सज्जन की मृत्यु के पश्चात इतनी विशाल विरासत को कोई नहीं संभाल पाया। मृत्यु और जिस सम्मान के मरणोपरांत हकदार थे, वह उन्हें नहीं मिल पाया।

महान पुरुष, सेठो के सेठ, सर्वश्रेष्ठ दानवीर, गरीबनवाज और पतितो–उद्दारक सेठ छाज्जूराम जी के महाप्रयाण (1943) के अवसर पर दीनबंधु चौ. छोटूराम जी ने कहा था भारत का महान दानवीर, गरीबों व अनाथों का धनवान पिता, तथा मेरे धर्म पिता सेठ छाज्जूराम जी अमर होकर हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए। उनके लिए सच्ची श्रृद्धांजलि यही होगी कि हम सभी उनकी इच्छाओं, आकांक्षाओ के अनुसार दिखाए गए मार्ग पर चलते रहें। इस महान विभूति को हम सदैव याद रखेंगे। चौ. छाज्जूराम के द्वारा किये परोपकारी कार्य, उनके द्वारा बनाई गयी संस्थाएँ वैसे ही खड़ी है और उनके सपने को पूरा कर रही हैं। उनका आज के समाज में बहुमुखी योगदान है। जैसे–जैसे समय बीतता जायेगा वैसे–वैसे उनको मानवतावादी युगपुरुष के रूप में याद किया जायेगा।

# सैम बहादुर मानेकशॉ सेना के प्रथम फील्ड मार्शल और रणनीतिज्ञ की कौशलता के धनी थे।

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

जिन्हें प्रथम फील्ड मार्शल और सैम बहादुर (मानेकशॉ) के नाम से भी जाना जाता है, 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारतीय सेना के सेनाध्यक्ष थे, और फील्ड मार्शल का पद धारण करने वाले पहले भारतीय सैन्य अधिकारी थे। उनका सक्रिय सैन्य करियर द्वितीय विश्वयुद्ध से आरंभ होकर चार दशकों और पाँच युद्धों तक विस्तृत रहा है।

मानेकशॉ 1932 में भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून के पहले दल में शामिल हुए थे। उन्हें 12वीं फ्रंटियर फोर्स रेजिमेंट की चौथी बटालियन में नियुक्त किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध में वीरता के लिए उन्हें मिलिट्री क्रॉस से सम्मानित किया गया था। 1947 में भारत के विभाजन के बाद, उन्हें 8वीं गोरखा राइफल्स में फिर से नियुक्त किया गया। 1947 के भारत–पाकिस्तान युद्ध और हैदराबाद संकट के दौरान मानेकशॉ को योजना बनाने की भूमिका सौंपी गई, परिणामस्वरूप उन्होंने कभी पैदल सेना (Infantry) बटालियन की कमान नहीं संभाली। उन्हें सैन्य अभियान निदेशालय में सेवा के दौरान ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत किया गया। वह 1952 में 167वें इन्फैंट्री ब्रिगेड के कमांडर बने और 1954 तक इस पद पर रहने के बाद उन्होंने सेना मुख्यालय में सैन्य प्रशिक्षण के निदेशक का पदभार संभाला।

रॉयल कॉलेज ऑफ डिफेंस स्टडीज में उच्च कमांड की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें 26वें इन्फैंट्री डिवीजन का जनरल ऑफिसर कमांडिंग नियुक्त किया गया। उन्होंने डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज के कमांडेंट के रूप में भी कार्य किया। 1963 में मानेकशॉ को सेना कमांडर के पद पर पदोन्नत किया गया और उन्होंने पश्चिमी कमान संभाली। 1964 में उनका स्थानांतरण पूर्वी कमान में हो गया।

मानेकशॉ पहले से ही डिवीजन (सैन्य), कोर (सैन्य) और क्षेत्रीय स्तरों पर सैनिकों की कमान संभालने के बाद 1969 में सेना के सातवें प्रमुख बने। उनके कमान के तहत भारतीय सेनाओं ने 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तान के खिलाफ विजयी अभियान चलाया, जिसके परिणामस्वरूप दिसंबर 1971 में बांग्लादेश का निर्माण हुआ। उन्हें भारत के दूसरे और तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

सैम मानेकशॉ का जन्म 3 अप्रैल 1914 को अमश्तसर, पंजाब के एक पारसी परिवार में हुआ था। उनकी माँ हिला नी मेहता (1885–1973) गृहणी और पिता हॉरमुसजी मानेकशॉ (1871–1964) चिकित्सक थे। उनके माता–पिता पारसी थे जो तटीय गुजरात क्षेत्र के वलसाड शहर से अमृतसर चले गये थे। 1903 में मानेकशॉ के माता–पिता मुंबई छोड़कर लाहौर के लिए निकले, जहाँ हॉरमुसजी के दोस्त रहते थे।

बचपन में सैम शरारती और बेहद जोशीले थे। उनकी आरंभिक इच्छा अपने पिता की तरह चिकित्सक बनने की थी। उन्होंने अपने प्राथमिक स्कूल की शिक्षा पंजाब में पूरी की और फिर शेरवुड कॉलेज, नैनीताल चले गए। 1929 में 15 साल की उम्र में उन्होंने जूनियर कैम्ब्रिज सर्टिफिकेट, कैम्ब्रिज इंटरनेशनल एग्जामिनेशन (Cambridge International Examinations) द्वारा विकसित अंग्रेजी भाषा का पाठ्यक्रम, लेकर कॉलेज छोड़ दिया। 1931 में उन्होंने सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। अपने पिता द्वारा उन्हें लंदन भेजने से इनकार किये जाने के विरोध स्वरूप मानेकशॉ ने एक पद के लिए आवेदन किया और दिल्ली में प्रवेश परीक्षा में बैठे। 1 अक्टूबर 1932 को वह प्रतियोगिता के माध्यम से चुने जाने वाले पंद्रह कैडेटों में से एक थे। मानेकशॉ में योग्यता क्रम में छठवाँ स्थान प्राप्त किया। वे गोरखा रेजिमेंट में शामिल होने वाले पहले स्नातकय भारत के थल सेनाध्यक्ष के रूप में सेवा करने वाले पहले व्यक्तिय और फील्ड मार्शल का पद प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बने।

द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने पर योग्य अधिकारियों की कमी के कारण, युद्ध के पहले दो वर्षों में मानेकशॉ को कैप्टन और मेजर के कार्यवाहक या अस्थायी रैंक पर नियुक्त किया गया। 4 फरवरी 1942 को उन्हें स्थायी कैप्टन के रूप में पदोन्नत किया गया। उन्होंने 1942 में बर्मा में सितांग नदी पर 12वीं फ्रंटियर फोर्स रेजिमेंट की चौथी बटालियन के साथ अपनी कंपनी का नेतृत्व किया। मानेकशॉ उस युद्ध में अपनी बहादुरी के लिए पहचाने गए। सितांग सेतुशीर्ष (Bridgehead) के बाईं ओर एक प्रमुख स्थान पगोडा पहाड़ी (Pagoda Hill) के आसपास लड़ाई के दौरान उन्होंने हमलावर जापानी सेना के खिलाफ जवाबी हमले में अपनी कंपनी का नेतृत्व किया। आधे से अधिक लोगों के हताहत होने के बावजूद कंपनी अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रही। पहाड़ी पर कब्जा करने के बाद मानेकशॉ लाइट मशीन गन (LMG) की गोली की चपेट में आ गए और गंभीर रूप से घायल हो गए।

युद्ध का अवलोकन करते हुए, 17वीं इन्फैंट्री डिवीजन के कमांडर, मेजर जनरल डेविड कोवान, मानेकशॉ को जीवन और मृत्यु के बीच जूझते देखकर उनकी ओर लपके। इस डर से कि कहीं मानेकशॉ की मृत्यु न हो जाय, जनरल ने उन पर अपना मिलिट्री क्रॉस रिबन चिपका दिया और कहा, 'एक मृत व्यक्ति को मिलिट्री क्रॉस से सम्मानित नहीं किया जा सकता'। 21 अप्रैल 1942 को लंदन गजट के अधिसूचना प्रकाशन के साथ इस पुरस्कार को आधिकारिक बना दिया गया।

मानेकशॉ को उनके अर्दली मेहर सिंह (शेर सिंह नहीं) ने युद्ध के मैदान से बाहर निकाला और उन्हें एक ऑस्ट्रेलियाई सर्जन के पास ले गए। सर्जन ने शुरू में यह कहते हुए मानेकशॉ का इलाज करने से इनकार कर दिया कि वह बुरी तरह घायल हो गए थे (उनके पूरे शरीर में 7 गोलियां लगी थीं। मेहर सिंह, सैम को अपने कंधों पर उठाकर युद्ध के मैदान से लगभग 14 मील पैदल चले)। मानेकशॉ के बचने की संभावना बहुत कम थी, लेकिन मेहर सिंह बदेशा ने डॉक्टर को उनका इलाज करने के लिए मजबूर किया। मानेकशॉ के होश में आने पर सर्जन ने पूछा कि उन्हें क्या हुआ था तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें 'खच्चर ने लात मारी थी'। मानेकशॉ के हास्यबोध से प्रभावित होकर डॉक्टर ने उनका इलाज किया। मानेकशॉ के फेफड़े, लीवर और किडनी से सात गोलियाँ निकालीं गयीं। उनके आँतों के कुछ हिस्से भी निकाल दिए गए। मानेकशॉ के विरोध पर कि वह अन्य रोगियों का इलाज करते हैं, रेजिमेंटल चिकित्सा अधिकारी, कैप्टन जी०एम० दीवान ने उनकी देखभाल की।

1947 में भारत के विभाजन पर मानेकशॉ की इकाई 12वीं फ्रंटियर फोर्स रेजिमेंट की चौथी बटालियन पाकिस्तानी सेना का हिस्सा बन गई, इसलिए मानेकशॉ को 8 गोरखा राईफल्स में फिर से नियुक्त किया गया। 1947 में विभाजन से संबंधित मुद्दों को संभालते समय मानेकशॉ ने ग्रेड 1 जनरल स्टाफ ऑफिसर के रूप में अपनी योजना और प्रशासनिक कौशल का प्रदर्शन किया। 1947 के अंत में मानेकशॉ को 5 गोरखा राईफल्स (फ्रंटियर फोर्स) की तीसरी बटालियन (3/5 जीआर (एफएफ) के कमांडिंग ऑफिसर के रूप में तैनात किया गया। 22 अक्टूबर को मानेकशॉ के नई नियुक्ति पर जाने से पहले, पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर में घुसपैठ की और डोमेल तथा मुजफ्फराबाद पर कब्जा कर लिया। अगले दिन जम्मू और कश्मीर रियासत के शासक महाराज हरि सिंह ने भारत से मदद की गुहार लगाई। 25 अक्टूबर को मानेकशॉ राज्य विभाग के सचिव वी०पी० मेनन के साथ श्रीनगर गए। मेनन महाराजा हरि सिंह के साथ रुके और मानेकशॉ ने कश्मीर की स्थिति का हवाई सर्वेक्षण किया। मानेकशॉ के अनुसार महाराजा ने उसी दिन विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए और वे वापस दिल्ली लौट गए। लॉर्ड माउंटबेटन और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को इसकी जानकारी दी गई। जानकारी के साथ ही मानेकशॉ ने कश्मीर पर पाकिस्तानी सेना का कब्जा रोकने के लिए सैनिकों की तत्काल तैनाती का सुझाव दिया।

मानेकशॉ को 4 फरवरी 1952 को स्थायी कर्नल के रूप में पदोन्नत किया गया। अप्रैल 1952 में उन्हें 167 इन्फैंट्री ब्रिगेड का कमांडर नियुक्त किया गया था, जिसका मुख्यालय फिरोजपुर में था। 9 अप्रैल 1954 को उन्हें सेना मुख्यालय में सैन्य प्रशिक्षण का निदेशक नियुक्त किया गया। एक कार्यवाहक ब्रिगेडियर के रूप में उन्हें 14 जनवरी 1955 को महूँ (Mhow) में पैदल सेना स्कूल के कमांडेंट के रूप में तैनात किया गया। वे 8वीं गोरखा राइफल्स और 61वें घुड़सवार सेना दोनों के कर्नल भी बने। पैदल सेना स्कूल के कमांडेंट के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने पाया कि प्रशिक्षण मैनुअल पुराने हो गए थे। उन्होंने मैनुअल को भारतीय सेना द्वारा नियोजित रणनीति के अनुरूप बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 4 फरवरी 1957 को उन्हें ब्रिगेडियर के स्थायी पद पर पदोन्नत किया गया।

1 मार्च 1959 को मानेकशॉ को स्थायी मेजर जनरल के रूप में पदोन्नत किया गया। 1 अक्टूबर को उन्हें डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन का कमांडेंट नियुक्त किया गया। वहाँ वह एक विवाद में फँस गए जिसने उनका करियर लगभग समाप्त ही कर दिया था। मई 1961 में थिमैया ने सेनाध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया और जनरल प्राण नाथ थापर उनके उत्तराधिकारी बने। वर्ष के शुरुआत में मेजर जनरल बृज मोहन कौल को लेफ्टिनेंट जनरल के रूप में पदोन्नत किया गया और मेनन द्वारा उन्हें क्वार्टर मास्टर जनरल (क्यूएमजी) नियुक्त किया गया। यह नियुक्ति थिमैया की सिफारिश के विरुद्ध की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने इस्तीफा दे दिया। कौल को चीफ ऑफ जनरल स्टाफ (सीजीएस) बनाया गया, जो सीओएएस के बाद सेना मुख्यालय में दूसरी सबसे बड़ी नियुक्ति थी। कौल ने नेहरू और मेनन के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए और सीओएएस से भी अधिक शक्तिशाली बन गए।

भारत–चीन युद्ध छिड़ गया और अदालती कार्यवाही के कारण मानेकशॉ युद्ध में शामिल नहीं हो सके। युद्ध में भारतीय सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। इस पराजय के लिए कौल और मेनन को मुख्य रूप से जिम्मेदार ठहराया गया और दोनों को बर्खास्त कर दिया गया। नवंबर 1962 में नेहरू ने मानेकशॉ को चतुर्थ कोर की कमान संभालने के लिए कहा। मानेकशॉ ने नेहरू को बताया कि उनके खिलाफ अदालती कार्रवाई एक साजिश थी और उनकी पदोन्नति लगभग अठारह महीने से लंबित थी। नेहरू ने इसके लिए मानेकशॉ से माफी माँगी। कुछ ही समय के अंतराल पर 2

दिसंबर 1962 को मानेकशॉ को कार्यवाहक लेफ्टिनेंट जनरल के रूप में पदोन्नत किया गया और उन्हे तेजपुर में चतुर्थ कोर का जनरल कमांडिंग ऑफिसर नियुक्त किया गया।

कार्यभार संभालने के तुरंत बाद मानेकशॉ इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चीन के साथ युद्ध में चतुर्थ कोर की विफलता में खराब नेतश्त्व एक महत्वपूर्ण कारक था। उन्होंने महसूस किया कि उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी अपने हतोत्साहित सैनिकों के मनोबल को सुधारना था। उन्होंने अपने सैनिकों को और भी अधिक आक्रामक तरीके से काम करने का आदेश दिया। मानेकशॉ के कमान संभालने के केवल पाँच दिन बाद नेहरू ने अपनी बेटी इंदिरा गांधी और सीओएएस के साथ मुख्यालय का दौरा किया। उन्होंने सैनिकों को आगे बढ़ते हुए पाया। नेहरू ने कहा कि वह नहीं चाहते युद्ध में और लोग मरें। सीओएएस ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह अग्रिम आदेशों को रद्द करवा देंगे। मानेकशॉ ने जवाब दिया कि उन्हें इच्छानुसार अपने सैनिकों की कमान संभालने की अनुमति दी जानी चाहिए या उन्हें स्टाफ नियुक्ति पर भेज दिया जाना चाहिए। गांधी ने हस्तक्षेप किया और मानेकशॉ को आगे बढ़ने के लिए कहा। हालाँकि इंदिरा गांधी के पास कोई आधिकारिक पद नहीं था, फिर भी सरकार में उनका बहुत प्रभाव था। मानेकशॉ का अगला कार्य नॉर्थ–ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (एनईएफए) में सैनिकों को पुनर्गठित करना था। वहाँ पर उन्होंने सैनिकों के लिए उपकरण, आवास और कपड़ों की कमी को दूर करने के उपाय किए।

20 जुलाई 1963 को स्थायी लेफ्टिनेंट जनरल के रूप में पदोन्नत होने के बाद मानेकशॉ को 5 दिसंबर को सेना कमांडर नियुक्त किया गया। उन्होंने जनरल कमांडिंग ऑफिसर–इन–चीफ के रूप में पश्चिमी कमान की बागडोर संभाली। 1964 में 16 नवंबर को अपनी नियुक्ति प्राप्त करने के बाद वह पूर्वी कमान के जनरल कमांडिंग ऑफिसर–इन–चीफ के रूप में शिमला से कलकत्ता चले गए। वहाँ उन्होंने नागालैंड में विद्रोह का जवाब दिया, जिसके लिए उन्हें 1968 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। सेनाध्यक्ष की हैसियत से मानेकशॉ ने एक बार जुलाई 1969 में 8 गोरखा राईफल्स की एक बटालियन का दौरा किया। उन्होंने एक अर्दली से पूछा कि क्या वह अपने मुखिया का नाम जानता है। अर्दली ने उत्तर दिया कि हाँ वह जानता है। जब उससे प्रमुख का नाम पूछा गया तो उसने कहा सैम बहादुर "मानेकशॉ"।

अप्रैल के अंत में एक कैबिनेट बैठक के दौरान प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मानेकशॉ से पूछा कि क्या वह पाकिस्तान के साथ युद्ध के लिए तैयार हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि उनके अधिकांश बख्तरबंद और पैदल सेना टुकड़ी कहीं और तैनात किए गए हैं। उनके केवल बारह टैंक युद्ध के लिए तैयार हैं और वे अनाज की फसल के साथ रेल गाड़ियों के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि आगामी मानसून के साथ हिमालय के दर्रे जल्द ही खुल जाएँगे, जिसके परिणामस्वरूप भारी बाढ़ आएगी। कैबिनेट बैठक के खत्म होने के बाद मानेकशॉ ने इस्तीफे की पेशकश की। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया और बजाय इसके उन्होंने मानेकशॉ से सलाह माँगी। मानेकशॉ ने कहा कि यदि उन्हें उनकी शर्तों पर संघर्ष को संभालने की अनुमति दी जाय तो वे जीत की गारंटी दे सकते हैं। उन्होंने इसके लिए एक तारीख निर्धारित करने को कहा और श्रीमती गांधी इससे सहमत हो गईं।

युद्ध की आधिकारिक शुरुआत 3 दिसंबर 1971 को हुई, जब पाकिस्तानी विमानों ने देश के पश्चिमी हिस्से में भारतीय वायुसेना के ठिकानों पर बमबारी की। मानेकशॉ के नेतृत्व में सेना मुख्यालय ने आगे की रणनीति तैयार की रू लेफ्टिनेंट जनरल तपीश्वर नारायण रैना (बाद में जनरल और सीओएएस) की कमान वाली द्वितीय कोर को पश्चिम से प्रवेश करना थाय लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह की कमान वाली चतुर्थ कोर को पूर्व से प्रवेश करना था, तैंतीसवीं कोर (जिसकी कमान लेफ्टिनेंट जनरल मोहन एल० थापन के पास थी) को उत्तर से प्रवेश करना था और 101 संचार क्षेत्र (जिसकी कमान मेजर जनरल गुरबक्स सिंह के पास थी) को उत्तर–पूर्व से सहायता प्रदान करनी थी। इस रणनीति को लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के नेतृत्व में पूर्वी कमान द्वारा क्रियान्वित किया जाना था। मानेकशॉ ने पूर्वी कमान के चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेंट जनरल जे०एफ०आर० जैकब को भारतीय प्रधानमंत्री को सूचित करने का निर्देश दिया कि पूर्वी कमान से सैनिकों की आवाजाही के लिए आदेश जारी किए जा रहे हैं। अगले दिन नौसेना और वायु सेना ने भी पूर्वी और पश्चिमी दोनों मोर्चों पर पूरे पैमाने पर अभियान शुरू किया।

जैसे–जैसे युद्ध आगे बढ़ा, पाकिस्तान का प्रतिरोध चरमरा गया। भारत ने अधिकांश लाभप्रद स्थितियों पर कब्जा कर लिया और पाकिस्तानी सेना को अलग–अलग कर दिया। पाकिस्तानी सेना ने अब आत्मसमर्पण करना या पीछे हटना शुरू कर दिया। हालात पर चर्चा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद 4 दिसंबर 1971 को इकट्ठी हुई। 7 दिसंबर को लंबी चर्चा के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने "तत्काल संघर्ष विराम और सैनिकों की वापसी" के लिए एक प्रस्ताव रखा। सोवियत संघ ने इसे दो बार वीटो किया और बंगालियों के खिलाफ पाकिस्तानी अत्याचारों के कारण, यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस ने मतदान में भाग नहीं लिया। फिर भी बहुमत ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। मानेकशॉ ने 9, 11 और 15 दिसंबर को रेडियो प्रसारण द्वारा पाकिस्तानी सैनिकों को संबोधित किया। उन्होंने सैनिकों को आश्वासन दिया कि यदि वे

आत्मसमर्पण करते हैं तो उन्हें भारतीय सैनिकों से सम्मानजनक व्यवहार मिलेगा। अंतिम दो प्रसारण पाकिस्तानी कमांडरों मेजर जनरल राव फरमान अली और लेफ्टिनेंट जनरल आमिर अब्दुल्लाह खान नियाजी के अपने सैनिकों को दिए गए संदेशों के जवाब के रूप में किए गए।

11 दिसंबर को अली ने संयुक्त राष्ट्र को संदेश भेजकर युद्धविराम का अनुरोध किया लेकिन इसे राष्ट्रपति याह्या खान द्वारा अधिकृत नहीं किया गया और लड़ाई जारी रही। भारतीय सेनाओं के हमलों तथा कई चर्चाओं और परामर्शों के बाद खान ने पाकिस्तानी सैनिकों की जान बचाने के लिए युद्ध रोकने का फैसला किया। आत्मसमर्पण करने का वास्तविक निर्णय नियाजी द्वारा 15 दिसंबर को लिया गया था। इसकी सूचना मानेकशॉ को संयुक्त राज्य अमेरिका के महावाणिज्य दूत के द्वारा वाशिंगटन के माध्यम से ढाका में दी गयी थी। मानेकशॉ ने उत्तर दिया कि वह युद्ध तभी रोकेंगे जब पाकिस्तानी सैनिक 16 दिसंबर को 09:00 बजे तक भारतीय सैनिकों के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे। नियाजी के अनुरोध पर समय सीमा उसी दिन 15रू00 बजे तक बढ़ा दी गई। 16 दिसंबर 1971 को लेफ्टिनेंट जनरल अमीर अब्दुल्ला खान नियाजी द्वारा आत्मसमर्पण के दस्तावेज पर औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किए गए।

युद्ध 12 दिनों तक चला और इसमें 94,000 पाकिस्तानी सैनिकों को बंदी बना लिया गया। इसका अंत पाकिस्तान के पूर्वी हिस्से के बिना शर्त आत्मसमर्पण के साथ हुआ। इस युद्ध के परिणामस्वरूप एक नए राष्ट्र के रूप में बांग्लादेश का जन्म हुआ। युद्धबंदियों के अलावा पाकिस्तान को भारत के 2,000 के मुकाबले 6,000 जनहानि का सामना करना पड़ा। युद्ध के बाद मानेकशॉ युद्धबंदियों के प्रति अपनी करुणा के लिए जाने गए। सिंह बताते हैं कि कुछ मामलों में उन्होंने युद्धबंदियों को व्यक्तिगत रूप से संबोधित किया और सिर्फ अपने सहयोगियों के साथ अकेले में उनसे बात भी की। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारतीय सेना उनके साथ अच्छा व्यवहार करे। उनके लिए कुरान की प्रतियाँ उपलब्ध कराने का प्रावधान किया और उन्हें त्योहार मनाने और अपने प्रियजनों से पत्र तथा पार्सल प्राप्त करने की अनुमति दी।

मानेकशॉ को जून 1972 में सेवानिवृत्त होना था, लेकिन उनका कार्यकाल छह महीने की अवधि के लिए बढ़ा दिया गया। मानेकशॉ को 1 जनवरी 1973 को 'सशस्त्र बलों और राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट सेवाओं की मान्यता के तौर पर', फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत किया गया। उन्हें 3 जनवरी को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में औपचारिक रूप से रैंक प्रदान किया गया। वे इस पद पर पदोन्नत होने वाले पहले भारतीय सैन्य अधिकारी बने।

भारतीय राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा के लिए भारत के राष्ट्रपति ने 1972 में मानेकशॉ को पद्म विभूषण से सम्मानित किया। मानेकशॉ लगभग चार दशक के करियर के बाद 15 जनवरी 1973 को सक्रिय सेवा से सेवानिवृत्त हुए। वह अपनी पत्नी सिल्लू के साथ वेलिंगटन छावनी के बगल में स्थित शहर कुन्नूर में बस गए। इसी जगह पर उन्होंने अपने करियर की शुरुआत में डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज के कमांडेंट के रूप में काम किया था। गोरखा सैनिकों के बीच लोकप्रिय मानेकशॉ को नेपाल ने 1972 में नेपाली सेना के मानद जनरल के रूप में सम्मानित किया। 1977 में उन्हें राजा बीरेंद्र द्वारा नेपाल अधिराज्य के नाइटहुड की उपाधि त्रिशक्ति पट्ट से सम्मानित किया गया। भारतीय सेना में अपनी सेवा के बाद, मानेकशॉ ने कई कंपनियों के बोर्ड में एक स्वतंत्र निदेशक और कुछ मामलों में अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह मुखर थे और राजनीतिक रूप से सही होने की परवाह नहीं करते थे। एक बार जब सरकार के आदेश पर उनकी जगह नायक नाम के एक व्यक्ति को कंपनी के बोर्ड में शामिल किया गया, तो मानेकशॉ ने चुटकी लेते हुए कहा, 'इतिहास में यह पहली बार है जब एक नायक (कॉर्पोरल) ने एक फील्ड मार्शल की जगह ली है।'

मई 2007 में पाकिस्तानी फील्ड मार्शल अयूब खान के बेटे गौहर अयूब खान ने दावा किया कि मानेकशॉ ने 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान 20,000 रुपये में भारतीय सेना की खुफिया जानकारी पाकिस्तान को बेची थी। उनके आरोपों को भारतीय रक्षा विभाग ने खारिज कर दिया।

मानेकशॉ को 1973 में फील्ड मार्शल के पद से सम्मानित किया गया, लेकिन यह कहा जाता है कि उन्हें पूरे भत्ते नहीं दिए गए जिसके वे हकदार थे। 2007 में राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने वेलिंगटन में मानेकशॉ से मुलाकात की और उनके 30 वर्षों से अधिक के बकाया वेतन देने के लिए 1.3 करोड़ रुपये (2023 में 3.9 करोड़ रुपये) का चेक प्रदान किया। मानेकशॉ की 94 वर्ष की आयु में 27 जून 2008 की सुबह 12:30 बजे तमिलनाडु के वेलिंग्टन के सैन्य अस्पताल में मश्त्यु हो गई। उन्हें निमोनिया तथा फेफड़े संबंधी बीमारी हो गई थी और वे कोमा में चले गए थे। कहा जाता है कि उनके आखिरी शब्द थे 'मैं ठीक हूँ'। उन्हें तमिलनाडु के उदगमंडलम (ऊटी) में पारसी कब्रिस्तान में उनकी पत्नी की कब्र के बगल में सैन्य सम्मान के साथ दफनाया गया था।

2008 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अहमदाबाद के शिवरंजिनी क्षेत्र में एक फ्लाईओवर ब्रिज का नाम मानेकशॉ के नाम पर रखा गया था। 2014 में नीलगिरी जिले के वेलिंग्टन में, ऊटी–कुन्नूर रोड पर मानेकशॉ ब्रिज (जिसका नाम 2009 में उनके नाम पर रखा गया था) के करीब उनके सम्मान में एक ग्रेनाइट प्रतिमा स्थापित की गई थी। पुणे छावनी में माणेकजी मेहता रोड पर भी उनकी प्रतिमा है। हमारी तरफ से सेम बहादुर सैनिको के प्रमुखको शत्–शत् नमनः।

# फसलां दी मुक गई राखी, ओ जट्टा आई बैसाखी (14 अप्रैल पर विशेष)

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

बडा खुश है रे जट्टा अपनी 'बम्पर क्राप' को देख कर। बडा चौडा–चौडा होकर तू दिखाई देवै सै अपने गोल्डन खेतों में। बल्ले–बल्ले। वाकई तूने तो कमाल ही कर दिखाया। तू तो रोता भी रहा, जान भी गंवाता रहा, तेरे किसी ने आंसू नहीं पोछे, फिर भी तूने इतिहास रच डाला। रिकार्ड अन्न उत्पन्न किया और न्यूयार्क की सड़कों पर भारत को अन्न मांगता कटोरा लिए दिखाया जाता था, वह विज्ञापन अब वहां नहीं है। तेरी हिम्मत की तो दाद देनी होगी–मिट्टी में मिट्टी जैसा होकर रेत से सोना उगलवाने में तूने अद्भुत व अद्वितीय कामयाबी हासिल कर ली। स्वतंत्रता के बाद सिर्फ एक बार सन् 1965 में पूरे देश में अनाज में आत्मनिर्भरता और 'अन्नदाता किसान' का महत्व पूरी गहराई से अपने दिल और दिमाग में रेखांकित किया था। लाल बहादुर शास्त्री के आह्वान पर पूरा देश किसान बन गया था। शास्त्री जी ने स्पष्ट किया था– "Jawan and Kisan together win wars"- अनाज निर्यातक अमरीका की धौंस धरी की धरी रह गई थी। आत्मनिर्भरता के स्वप्न को भारत के किसान ने अपनी मेहनत और सूझबूझ से यथार्थ को कठोर धरती पर उतार दिखाया। किसान ने स्वतंत्र भारत को खाद्य के क्षेत्र में तीन क्रांतियां लाई अनाज के क्षेत्र में हरित क्रांति, दूध के क्षेत्र में श्वेत क्रांति और मछली विकास के क्षेत्र में नीली क्रांति। पर तेरी इस कामयाबी से तुझे क्या मिला ओ भोले किसान? ऐसी स्थिति में यह प्रश्न मन में बार–बार उठता है कि हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और नीली क्रांति का अमृत कुंभ कौन ले भागा है? कहां और क्यों अटक गई–ग्राम विकास की हरहराती गंगा? भंगडे की मस्मस्तियों से गांव अब क्यों नहीं गूंजता? 'बम्बर क्राप' काट कर बैसाखी पर्व तो मना लेगा, पर तेरा बैसाखी का नशा तुरन्त गायब हो जायेगा, जब तू अपने दो मन दाणे मंडियों में ले जायेगा, वहां तुझे कौड़ियों के भाव अपनी फसल को बेचनी पड़ेगी। तूने इस फसल को उगाने के लिए अठन्नी खर्ची और इस दाम चवन्नी के मिले। ओ जट्टा ! इस घाटे की भरपाई कौन करेगा। तू इस हालात का सामना न कर पायेगा और खुदकुशी करने पर तक लाचार हो जायेगा। आजादी के बाद देश ने पांच युद्ध लड़े और सरहद पर दस हजार के कम जवानों ने अपनी प्राणों की आहुतियां दी हैंय पर तूने तो अपने तीन लाख से ज्यादा भाईयों को इस सदी में खुदकुशी करते देखा है। 145 करोड़ की आबादी का तू पेट भर रहा है पर तेरे खुद के पेट में एक जूण की रोटी भी नहीं जाती–ये माजरा क्या है? क्या शास्त्री जी की 'जय जवान जय किसान' की निष्ठा को ताक पर रख दिया है? तू भी क्या इंसान है– एक बहुत बडी त्रासदी का नायक है।

यह कैसी कहानी है, यह कैसा संकट है? किसान बिपदा का मारा क्यों? वह बिल्कुल बेसहारा है, शत्रु उसके चारों तरफ खड़े हैं। कोई हमदर्द उस का है ही नहीं। इस स्थिति को देखकर तो जुबान से बस यही शब्द निकलते हैं:–

"इस कौम का इलाही, दुखडा किसे सुनाऊ?<br>
डर है कि इस के गम में खुद घुल धुलकर मर न जाऊं।"

मेरे मन में बडी बेचौनी है। क्यों किसान मसीहा चौधरी छोटूराम किसानो के हित हेतु वायसराय लॉर्ड वेवल से भिडे थे? क्यों उन्होंने किसानो को रहण जमीन को छुडवाया था? क्यों वे किसान राज लाने के लिए संकल्प लिए सिर्फ 62 साल में इस दुनिया से रुकसत कर गये? किसानो की चिन्ता ने उनकी आयु छोटी कर दी थी। पर आज किसान उनकी इन बातों पर तवज्जो नहीं देते– "United Kisan is an Unbeatable Force"- बिखरे किसानों का भविष्य बिल्कुल अंधकार में है। सब कुछ झूठा लिखा है कि– भारत गांवों में बसता है, खेत–खलिहानों में बसता है। गांव तो आज प्राचीन सभ्यता के अवशेष दिखाई देते हैं। सब कुछ तो शहरों ने निगल लिया है, शहरी चकाचौंध में गांव जाने कहां खो गये? मैं भारी मन से यह अनुभव कर रहा हूँ:–

"ये शहर तमन्ना अमीरों की दुनिया,<br>
ये खुदगर्ज और बेजमीरों की दुनिया।<br>
यहां सुख मुझे, दो जहां का मिला है,<br>
मेरा गांव जाने कहां खो गया है?"

राजनेता लोग पहले बैसाखी मनाने गांव में आते थे, आजकल वे बैसाखी शहरों में सटे फार्महाऊसों में रिबन काटकर मनाते हैं। यह कार्पोरेट कल्चर है, पहले इसी कल्चर ने किसानो की जमीन फार्महाऊस बनाने हेतु औणे–पौणे दामों पर छीनी। अब यह कार्पोरेट जगत किसानो की सारी जमीन छीनने पर उतारू है। कृषि व्यवसाय को कार्पोरेटीकरण करने का षड़यंत्र चल रहा है। भारत के किसान को बन्धुवा मजदूर बनाने के लिए इन्टरनेशनल कार्पोरेट कम्पनियां अति सक्रिय हैं, और भारत का किसान इस ट्रैप में फंस चुका है। अभी–अभी भारत और अमरीका का ट्रेड डील हुआ है। इस डील के होने से भारत की कृषि व्यवस्था घोर संकट में आ जायेगी। अमरीका में 30 लाख किसान परिवार हैं जिनके प्रत्येक के पास हजारों एकड़ की लैंड होल्डिंग है और उनको सरकार की तरफ से प्रतिवर्ष लाखों डालर की सब्सिडी मिलती है। भारत में 15 करोड किसान परिवार हैं जिनमें से ज्यादातर किसानो के पास आधा एकड़ दो तीन एकड़ की

काश्त भूमि है। भारत में प्रति एकड़ कृषि उत्पाद अमरीका के प्रति एकड़ कृषि उत्पाद से बहुत कम है। जब अमरीका का कृषि उत्पाद भारत में डम्प होगा तो भारतीय किसान आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः लुढ़क जायेगा। वह इस स्थिति में बस बन्धुवा बनकर रह जायेगा। भारत में खेती इस देश की सभ्यता की आत्मा है और अमरीका का हमारी कृषि पर प्रभुत्व होने से हमारी सभ्यता पतन होने की ओर अग्रसर हो जायेगी।

भारत में खेतीहर समाज एक अत्याधिक दीर्घकालीन सामाजिक परिघटन का प्रतिफलन था। इस मसाज की विकास के हर क्षेत्र में उपेक्षा हुई है। गांधी जी के बताये उपायों द्वारा प्रत्येक ग्राम को एक स्वावलंबी ईकाई बनाना था जो स्वतंत्र भारत में नहीं हुआ। न किसान, न जवान और न पहलवान को सुरक्षा बस भारतीय परिवेश का अमेरिकीकरण–अति विष्फोटक स्थिति का आगाज।

# Bibi Amtus Salam (1916-1985)

**- R.N.Malik**
**(Mob. 9911078502)**

Bibi Amtus Salam was a unique exponent of Hindu-Muslim amity, unity and communal harmony. She always looked at Hindus and Muslims as sons and daughters of one God Almighty with myriad names. It will not be suffice to say that passion for communal harmony was in her blood. In fact, one felt as if some divine force was prodding or impelling her to take up this cause in an exemplary manner. The precise year of her death is not known as only sketchy details of her life journey were available.

She was the daughter of a rich and conservative Pathan Abdul Majid Khan of Patiala. Her maternal relations were in Rajpura. She was not given any formal education because of the Purdah system. After attaining youth, she joined the Sewagram Ashram of Mahatma Gandhi near Wardha in 1933. Gandhi Ji was so impressed with her work and attitude that he wrote to Sardar Patel," The heart of this girl is of pure Gold with body of brass." The details of her life in the Ashram for the period 1933-45 are not known.

However, in 1946, she travelled with Gandhi Ji during the Peace Marchin in east Bengal in order to extinguish the communal fire. Other members of the team were Pyare Lal, his sister Susheela Nayyar, Suchita Kriplani, Amritlal Thakker, Susheela Pai, Kanu Gandhi, Abha and Prof.Nirmal Kumar Bose. Initially, Gandhi Ji undertook 21 days fast at Noakhali that melted the communal hatred among people and was thus able to extinguish the communal flames to some extent. But ambers of fire were still smouldering and releasing heat. Consequently, Gandhi Ji embarked on a village to village journey on foot. He was 77 at that time. Members of his team were sent to different villages for making advance arrangements and give information to the villagers of the impending visits of Gandhi Ji. Salam was deputed to village Sarandi. There was a Kali Mandir where three swords were traditionally kept for the Kurbani ceremony of animals. A rumour was mischievously spread that the three swords were being sharpened to attack the Muslims. Accordingly, some goons damaged the temple at night and decamped with the three swords. There was a big ruckus the next day. Amtus Salam went on a fast and declared that she would not eat anything till all the three swords were returned. Two swords were returned soon as the third sword was snatched by an absconder and ran away. Still she continued with her fast and it entered the 25th day. Gandhi Ji reached the village and took a solemn assurance from the villagers that they would maintain perfect communal amity and harmony in future at all costs. Only then, Amtus Salam broke her fast. After the completion of the Noakhali March, Amtus Salam returned to Delhi.

Soon, there were severe communal clashes between Hindus and Muslims before and after the partition of India. Lacs of people lost their lives and much more were injured. Family members were also lost from each other in many cases. Amtus Salam, Lajwanti Hoonja and Rameshwari Nehru took up another humanitarian project of restoring kidnapped girls to their families from both sides. Amtus Salam visited three districts around Bahawalpur and shamed the Muslims by going on a fast. Lajwanti Hoonja visited the villages around Deragazi Khan. Likewise, Rameshwari Nehru visited villages around Karachi and the trio restored thousands of Hindu girls back to their parents.

Government of India set up a new township at Rajpura like the one at Nilokheri for rehabilitation of refugee families. Amtus Salam set up Kasturba Seva Sadan for the destitute refugees at Rajpura and involved herself fully in this new endeavour. Her fame for humanitarian activities had travelled far and wide. Now she was able to have a direct access to P.M.O. Once she complained to Prime Minister Nehru that some local officials had become negligent in performing their duties. Soon, a directive came from the PMO and the issue was settled urgently. Finally, Amtus Salam settled at Rajpura permanently and led the life of a saint or Sanyasini and embarked upon another project of creating facilities of education for children. She never took airs of her welfare programs and worked silently and remained an unsung hero till her probable death in September 1985.



*कामयाब होने के लिए, अकेले ही आगे बढ़ना पड़ता है। लोग तो पीछे तब आते है, जब आप कामयाब होने लगते है।।*

# DETAIL OF DONATION RECEIVED FOR CONSTRUCTION OF CH. CHHOTU RAM YATRI NIWAS KATRA-JAMMU

**Sh. Satbir Singh Punia** 101000.00
# 703, Alpha Apartment, Sector 17, Panchkula.

**Sh. Jai Singh Thekedar** 51000.00
Park Road, Gohana, Distt. Sonepat.

**Sh. Narender Kumar Payal** 51000.00
# 617, Sector 6, Panchkula.

**Sh. S. R. Hooda** 51000.00
# 767, Sector 25, Panchkula.

**Sh. Parveen Chaudhary, CE PWD (B&R)** 31000.00
# 691, Sector 12, Panchkula.

**Sh. Raghuvinder Malik** 25100.00
# 305, GH-03, Sector 27, Panchkula.

**Sh. Sunder Singh Grewal** 21000.00
# 887, Sector 9. Panchkula.

**Mrs. Manorma Rana** 21000.00
w/o Sh. Virender Rana
# 704, Abhinandan Society, Sector 51, Gurugram

**Sh. Baljit Singh Rathee** 21000.00
Flat No. 508, GH-34, Sector 20, Panchkula

**Sh. Jaswinder Singh Panjeta** 21000.00
# 723, Sector 12-A, Panchkula.

**Sh. Bhupinder Hooda** 21000.00
**S/o Sh. Krishan Hooda**
VPO: Rurkee, Distt. Rohtak.

**Sh. Karamvir Singh Mahaal** 21000.00
# 34, Rasul Pur, Bahlolpur, Hapur, (U.P.)

**Capt. Joginder Singh Dhanda** 21000.00
# 28, Sector 27, Panchkula.

**Sh. Krishan Kumar Goyat** 21000.00
# 599, Shiv Mandir, Suraj Pur, Kalka, Distt. Panchkula.

**Sh. Vidya Nand Beniwal** 21000.00
# 206, GH-19, MDC, Sector 5, Panchkula

**Sh. Narendar Singh Hooda** 21000.00
Flat No. 12, GH-11, Sector 5, Panchkula

**Sh. Anil Kaliraman s/o Sh. Om Parkash** 21000.00
VPO: Bhawar, Distt. Sonepat

**Sh. Ram Singh, SDE (Rtd.)** 21000.00
# 691, Sector 12, Panchkula.

**Col. Nilesh Dahiya** 21000.00
C7/1, 1st Floor, DLF Valley Sector 3,
Pinjore, Distt. Panchkula.

**Sandeep Kumar S/o Sh. Dharamvir Singh** 21000.00
VPO: landa, Distt. Ambala.

**Sh. Sukhbir Singh Malik** 21000.00
D-2, MDC, Sector 5, Panchkula.

**Ch. Sultan Singh, IFS (Rtd.)** 21000.00
# 714, Sector 12, Panchkula.

**Col. O. P. Dahiya** 21000.00
# 127, Sector 18-A, Chandigarh.

**Sh. Ram Pal Malik** 11000.00
# 535, Sector 2, Panchkula.

**Sh. Ram Tirath Malik, Sarpanch** 11000.00
VPO: Ramkali, Distt. Jind

**Sh. Gobind Ram, Sarpanch** 11000.00
VPO: Khema Kheri, Distt. Jind

**Sh. Vijendar Malik, Sarpanch** 11000.00
VPO: Shamlo Kalan Distt. Jind

**Sh. Vikram Singh s/o Sh. Ishwar Singh** 11000.00
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind

**Sh. Raja s/o Sh. Maha Singh Sarpanch** 11000.00
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind

**Sh. Mahendar Singh Bhardwaj** 11000.00
# 706, Sector 21, Panchkula.

**Sh. Shamsher Singh Lohan** 11000.00
Councellor, M. C. Narnound.

**Sh. Virendar Singh Punia** 11000.00
# 507, Sector 21, Panchkula.

**Sh. Satbir Singh Saini, HCS (Rtd.)** 11000.00
# 171, Sector 25, Panchkula.

**Brig. Subhash Chander Rangi (Rtd.)** 11000.00
# 6374-B, Rajiv Vihar, Manimajra (U.T.)

**Sh. Ranbir Singh, Ex-Sarpanch** 10200.00
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind.

**Sh. H. S. Bhadu** 5100.00
# 75, Friends Colony, Hisar.

**Sh. Navinder Singh** 5100.00
# 3130, Sector 28 Chandigarh.

**Dr. Gyanwati** 5100.00
# 541, H. B. Colony, Jind. (Haryana)

**Sh. Om Parkash Kadyan, IPS (Rtd.)** 5100.00
# 377, Sector 12, Panchkula.

**Mrs. Keshari Pannu w/o Late Sh. H.S. Pannu** 5100.00
# 355, Sector 21, Panchkula.

**Sh. Desh Raj Poshwal** 5100.00
Sector 25, Panchkula.

**Sh. Wazir Singh Kharb** 5100.00
# 1589, Sector 25, Panchkula

**Sh. Devendar Malik** 5100.00
# 2697, Sector 21, Panchkula.

**Sh. Ranbir Singh, Sarpanch** 5100.00
VPO: Shamlo-kalan, Distt. Jind

**Sh. Subh Ram s/o Sh. Chhajju Ram** 5100.00
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind

**Sh. Dalip Narwal s/o Sh. Mahendar Narwal** 5100.00
# 58, Subhash Nagar, HMT Pinjore

**Sh. Rajinder Singh s/o Sh. Manphool Singh** 5100.00
# 841, Sector 20A, Chandigarh

**Col. Nirbhai Singh Phaugat** 5000.00
# 661, Sector 21, Panchkula.

**Mrs. Urmila Singh** 5000.00
w/o Late Ch. Gurnam Singh, IFS (Rtd.)
# 485, Sector 6, Panchkula.

**Sh. Sunil Sharma** 3100.00
VPO: Gawar, Distt. Hisar.

**Sh. Ram Chander Pannu** 3100.00
# 192/3, Gali No 9, Shanti Nagar, Manimajra

**Sh. Aditya Devi Lal** 3100.00
MLA, Haryana Vidhan Sabha

**Sh. Harnam Singh, DSP (Rtd.)** 2100.00
# 779, Bharat Nagar, Bhiwani

**Sh. Jaibir Singh** 2100.00
VPO: Shamlo Kalan Distt. Jind.

**Sh. M. S. Sehrawat** 2100.00
# 183-A, NAC, Manimajra

**Sh. O. P. Dhankhar** 2100.00
# 1890, Sector 26, Panchkula.

**Sh. Ranbir Singh s/o Sh. Jagat Ram** 2100.00
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind

**Master Jai Singh Malik** 2100.00
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind

**Sh. Harpal Singh Chaudhary** 2100.00
# 503, Satyam Swastic Apartment Swastik Vihar, Zirakpur.

**Sh. D. S. Malik** 2100.00
# 1438, Sector 4, Panchkula.

**Sh. Tanvir Singh Malik** 2100.00
# 6319, Rajiv Vihar, Manimajra.



*अगर दृष्टि लक्ष्य पर हो और कदम राह पर हो तो ऐसी कोई राह नहीं जो लक्ष्य तक न जाती हो।*

| | |
|---|---|
| **Col. Rajesh Kumar Bhar**<br># 104-E, GH-19, Sector 20, Panchkula. | **2100.00** |
| **Mrs. Saviitri Deswal**<br># 623, Sector 7, Panchkula. | **2100.00** |
| **Sh. Wazir Singh Sandhu**<br># 696, Ecocity, New Chandigarh. | **2100.00** |
| **Sh. Narendar Singh Khandala**<br># 90, Sector 23, Panchkula. | **2100.00** |
| **Sh. Vijay Singh Malik, HCS**<br># 611, Sector 6, Panchkula. | **2100.00** |
| **Sh. Mewa Singh Dhull**<br>VPO: Harsola, Distt. Kaithal | **2100.00** |
| **Sh. Manish Sheokeen**<br>240-A, Dichaon Kalan, S.W. Delhi | **2000.00** |
| **Sh. Prem Singh Deswal**<br># 6302-B, MHC, Manimajra. | **1100.00** |
| **Sh. Jagdish Sheokand**<br># 1002, Sector 20, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Bhupinder Singh, Sarpanch**<br>VPO: Nindana, Distt. Jind. | **1100.00** |
| **Sh. Jagbir Singh Panghal**<br>Flat 502, GH-11, Sector 24 Panchkula | **1100.00** |
| **Sh. Ranbir Singh Malik S/o Sh. Jagat Singh**<br>VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana) | **1100.00** |
| **Sh. Bhupinder Singh Sarpanch**<br>VPO: Nindana, Distt. Jind (Haryana) | **1100.00** |
| **Sh. Ram Kumar (Nai)**<br>VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind. | **1100.00** |
| **Sh. Manbir Singh Sangwan**<br># 400, Sector 27, Panchkula | **1100.00** |
| **Sh. Anand Singh**<br># 1378, Sector 21, Panchkula | **1100.00** |
| **Sh. Mahabir Singh**<br># 516, Sector 12-A, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Pritam Singh Sheokand**<br># 778, Sector 27, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Ramphal Nain**<br># 671, Sector 21, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Naresh Dahiya**<br># 903, Sector 23, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Manjeet Chauhan**<br>Sector 20, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Jai Mal s/o Sh. Dilbagh Singh**<br>VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind. | **1100.00** |
| **Sh. Raj Pal s/o Sh. Partap Singh**<br>VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind | **1100.00** |
| **Sh. Jai Parkash s/o Sh. Ravi Singh**<br>VPO: Shamlo Kalan Distt. Jind | **1100.00** |
| **Sh. Anil (Banarsi) and Shiv Lal**<br>VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind | **1100.00** |
| **Sh. Satbir Singh s/o Sh. Dharam Pal**<br>VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind | **1100.00** |
| **Sh. Rajbir Deswal**<br>Flat No. 101, Sector 27, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Satbir Singh Dhankhar**<br># 609, GH-19, Sector 27, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Prem Singh**<br>Jat Bhawan Sector 27, Chandigarh. | **1100.00** |
| **Sh. Sumer Singh**<br>Jat Bhawan Sector 27, Chandigarh. | **1100.00** |
| **Sh. Dayal Singh Sangwan**<br># 996-A, Sector 12-A, Panchkula. | **1100.00** |
| **Sh. Ashok Kumar Balyan**<br>Flat No. 102, Society 20, Sector 27, Panchkula. | **1100.00** |
| **Dr. Yash Pal Berwal**<br># 875, Amrawati Enclave, Panchkula. | **1100.00** |

# वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Boy (DOB 29.09.91) 34/5'8" PhD Structural Engineering JRF and six time gate qualified worked as Guest facility at DCRUST murthal but not now. Preparing HPSC posts father Mahipal Gill Associate Prof of Physics (Retd) Jat Collage Rohtak, mother Principal (Retd) Grand mother Head teacher (Retd) & One younger Brother P MSc. Two plots 107 yds Native Village Kharenti, Rohtak. Avoid Gotras: Gill Dahiya. Gahlwat Direct Khrab. Cont.: 9416193949, 9991806472
- Suitable match for Jat Girl (DOB 08.03.96) 30/5'4.5" BAMS, Pursuing MS OBS & Gynae. Father retired from Indian Army. Brother Major (Doctor) in Indian Army. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Preferred Doctor/ Class-I officer. Avoid Gotras: Barak, Gulia, Rathee. Contact: 8329554190
- Suitable match for Jat Girl (DOB 15.02.98) 28/5'5" M.A. English from PU, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Mohali. Father retired Superintendent Haryana Government. Preferred match Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Contact: 6239058052
- Suitable match for Jat Girl (DOB 27.08.2000) 25/5'4" M.Sc. Math., B.Ed. CET 2025 qualified. Father Sub Inspector in Haryana Roadways. Mother House wife. Avoid Gotras: Chahal, Sehrawat, Malik. Contact: 9416674447
- Suitable match for Jat Girl (DOB 08.01.88) 37/5'3" BCA, MCA, B.Ed., Working as IB Educator in Heritage International School Gurugram. 6 yrs experience with Edubridge International School Mumbai & Heritage International School Gurugram. Avoid Gotras: Gandas, Sehrawat, Lohchab. Contact: 9868835193
- Suitable match for Jat Girl (DOB 01.11.98) 27 5'5" B.Com. M.Com (Psychology), B.Ed., CTET qualified. Working in government office in Chd. Father retired Under Secretary from Haryana Civil Secretariat. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Hooda, Duhan. Contact: 9417347896, 9878687264
- Suitable match for Jat Girl (DOB 20.12.96) 29 5'4" M.S. (Surgery). College topper P.A.Medical College Haridwar. B.A.M.S AYUSH University Kurukshetra. Working as Assistant Professor at COER University Roorkee (Uttrakhand). Father S.I. PS Barwala, Hisar. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Jakhar, Sihag, Nain. Contact: 8307986833
- Suitable match for Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-TGT. HTET-JBT. Four times, HTET-PGT. Twice, TET-JBT. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Contact: 9416869289
- Suitable match for Jat Girl (DOB 09.06.96) 29 5 feet B.Sc. Nursing from LLRM Medical College, Meerut. Employed as Nursing Officer at Banaras Hindu University Banaras. Income Rs. 10-15 LPA. Contact: 9760874881
- Suitable match for Jat Girl (DOB 25.09.98) 27/5'5" MA. Pursuing Diploma in Cyber Security from GJUS Hisar. Steno in Hindi & English. Training CTI (Steno Instructor) in ITI Jaipur. Father retired from Army and now in Government job. Avoid Gotras: Moond, Nain, Rabiya. Contact: 9467746241.
- Suitable match for Jat Girl (DOB 25.10.95) 30/5'6" B.Com Maharaja College Jaipur. M. Com (Economics, Administration & Financial Management) from University of Rajasthan. Father Hony. Captain in Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Dudhwal, Dhaka, Burdak, Bajiya. Contact: 9549901996
- Suitable match for Jat Girl (DOB 1999) Height 5 feet. B. A. Statistics M. A. Economics. Working as DEO in CTU Chandigarh on contract basis. Income Rs. 3.60 LPA. Avoid Gotras: Bamal, Malik, Kaliraman. Contact: 9815109960
- Suitable match for Jat Girl (DOB April 1998) 27/5'7". B.Sc. Medical. Employed as Constable in Haryana Police. Father expired. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Nain, Malik, Dhull. Contact: 9468407521
- Suitable match for Jat Girl (DOB 20.06.98) 27/. B.Sc. Nursing, PGIMER. Employed in PGI Chandigarh. Father Inspector retired from Haryana Police. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga. Contact: 9468407521
- Suitable match for Jat Girl (DOB 06.11.94) 31/. B. A. Kurukshetra University. M.Sc. Geography from GJUS Hisar. B.Ed. from CRSU Jind. Father ex-service man and now working in UCO Bank. Family settled at Hisar. Avoid Gotras: Chahar, Saharan, Duhan. Contact: 9068616400, 9467426435
- Suitable match for Jat Girl (DOB 15.06.2000) 25/5'6" B.A. from Miranda

House University of Delhi. M. A. Economics from IJNU. Bachelor of Education from Greenwood College of Education. CTET passed. Father retired from Army, now employed in SBI. Bank. Family settled at Karnal. Avoid Gotras: Kaliramana, Banger, Mathur. Contact: 9466942154 9467426435

- Suitable match for Jat Girl (DOB 06.02.93) 33/5'3" B.A. B.Ed. M.A. Punjab University. Working as teacher in a private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police and Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Contact: 8699726944, 7837908258
- Suitable match for Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc., & M.A. Economics from DAV College Chandigarh. Working as Cabin Executive in Air India. Father's own Business (Book shop). Mother housewife. Own residence in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Contact: 9988407607
- Suitable match for Jat Girl (DOB 27.09.96) 29/5'4" M.A., B.Ed. Employed as Constable in Chandigarh Police. Father farmer. Avoid Gotras: Saharan, Malik, Khunga. Contact: 9813528523
- Suitable match for Jat Girl (DOB 04.03.2000) 25/ B.Sc. Physics (Hons.), B.Ed. Working Ministry of Housing & Urban Affairs (GOI) as L.D.C. Father business. Mother Govt Teacher. Family settled at Rajpura (Punjab). Avoid Gotras: Lamba, Tomar. Contact: 9316440789, 9316253179
- Suitable match for Jat Girl (DOB 01.10.91) 34 B.Sc. Hons. Biotechnology. Working as Science Teacher in reputed private school. Father (late.) Agriculture Extension Officer. Mother housewife. Family settled at Rajgarh (H.P.) Preference Government job in Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Ahlawat, Rathi, Balyan. Contact: 8627912782, 9816414984.
- Suitable match for Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Engineer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Contact: 9303068646
- Suitable match for Jat Girl (DOB 26.10.96) 29/5'2" MBBS, BPS from Govt. Medical College Sonepat. DNB medicine from MAMC Agroha. Doing SR ship at GMCH Sector 32 Chandigarh. Father late Ex-serviceman & retired Inspector from Haryana Roadways. Mother ANM in NHM. Preferred MD/ MS/DNB or first class officer. Family settled at Kalka, Pinjore. Avoid Gotras: Narwal, Nain, Dhanda. Contact: 9034240791
- Suitable match for Divorced Jat Girl (DOB 10.02.91) 34/5'2" MBA, HR management from GJU Hisar. B. Tech. (CSE) from K.U.K. affiliated University. Package Rs. 8 LPA. Father retired. Family settled at Bhiwani. Avoid Gotras: Kasania, Beniwal. Contact: 9416921521, 9205756432
- Suitable match for Jat Girl (DOB 01.09.96) 29/5'3" M. Com. from P.U. Chandigarh. UGC, NET Commerce qualified. Father's Jewelry business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dagar, Dhull. Contact: 9896290431
- Suitable match for Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Contact: 9417333298
- Suitable match for Jat Boy (DOB 10.10.97) 28/170. B.A. Manager in Aditya Birla Group. Avoid Gotras: Darall, Solanki, Dahiya. Contact: 9467386368
- Suitable match for Jat Boy (DOB 05.12.91) 34/6'1" B. Tech. Electrical. LLB Hons. Practicing as Advocate in District Court Rohtak. Father Pharmacy Officer Retired. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Hooda, Rathee, Sangwan. Contact: 9416517438, 9466126438
- Suitable match for Jat Boy (DOB 13.02.99) 27/5'7" B.A. LLB. Advocate. Father Businessman. Mother Senior Nursing Officer in Ambedkar Govt Rohini Delhi. Avoid Gotras: Dahiya, Rathee, Sangroha. Contact: 9560344388
- Suitable match for Jat Boy (DOB 09.09.97) 28/6 feet. B. Tech. CS. MBA. Software Engineer. Permanent work from home. Package Rs. 25 LPA. Own Coaching Institute--Banakura Classes. Agriculture land 4.5 acre. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Contact: 9354839881
- Suitable match for Jat Boy (DOB 13.12.96) 29/5'7" Employed as Excise Inspector GST Department Ujjain (Bhopal Zone) M.P. Father in private sector. Mother housewife. Preferred Government job in Madhya Pradesh/ Chhatisgarh. Avoid Gotras: Kandola, Nain, Dalal. Contact: 9416339570
- Suitable match for Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Germany. Working as Equality Analyst in New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Contact: 8708370617, 9416823236
- Suitable match for Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" B.Com. Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Contact: 9068574655
- Suitable match for Jat Boy (DOB 10.07.89) 35/5'10" B. Tech. Civil Engineering. Sub Inspector in Delhi Police. Father expired. Mother Officer retired. Family settled in Mohali. Avoid Gotras: Beniwal, Brar, Nain. Contact: 9877086741
- Suitable match for Jat Boy (DOB 06.11.98) 26/ B.Com. Diploma in Computer Hatron. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Contact: 8146229865, 9877552019
- Suitable match for Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'9.5" MA. (GEO) from PU. B.Ed. Employed as Office Suptd. in Indian Railways, Rs. 7-8 LPA. Father lecturer retired. Mother ex-teacher. Family settled in Ambala with shop in Ambala Cantt. Avoid Gotras: Gill, Billing, Bilam. Contact: 9417064917
- Suitable match for Jat Boy (DOB 03.04.2000) 25/5'10" M. Tech. in Electrical from PEC Chandigarh. A.M. in Central Bank of India. Father Principal SRM Polytechnic Naraingarh. Mother in Haryana Government. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Kadyan, Nehra. Contact: 8398960130
- Suitable match for Jat Boy (DOB 16.02.94) 32/5'9" B. Tech. in Computer Science & Engineering from Kurukshetra University. Officer in Hry Govt, selected by HPSC. Father Retired Lt. Colonel. Family settled at Ambala City. Avoid Gotras: Sandhu, Mahla, Sindhur. Contact: 9466442353
- Suitable match for Jat Boy (DOB 14.06.93) 32/5'7" B. Tech. SR CRA in Noida Metro Rail. Income Rs. 68K /month. Father retired from DTC. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Balhara, Phogat. Contact: 9671377166
- Suitable match for Jat Boy (DOB 09.06.2000) 25/ 6feet. Employed in Navy. Salary Rs. 15 lac Per year. 27 acre agriculture land, three plots, six shops. Avoid Gotras: Beniwal, Dhaka, Dhanda. Contact: 9813130081, 7027100015
- Suitable match for Jat Boy (DOB 30.01.98) 28/5'9" M.A. Geography, NET qualified, Employed in Haryana Police. Father MPHW (M) in Health Department. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Duhan. Contact: 8685839986, 9992096462
- Suitable match for Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'8" Master in C.S. from University of Waterloo, Canada. B. Tech. C. S. from GNDEC Ludhiana. Working in I.T. MNC in Toronto, Canada. (Canadian PR). Salary S60000 CAD. Father working as GM (Engineering). Preferred working professional in Canada. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Contact: 9814622289
- Suitable match for Jat Boy (DOB 22.06.88) 37/5'10" MBA in Marketing & B. Tech. in ECE. Working in a reputed Company EY. Salary Rs. 45 LPA. Father working as GM (Engineering) in reputed Company. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Contact: 9814622289
- Suitable match for Jat Boy (DOB 02.05.98) 27/6'3" B. A. P.U., Global Business Management from Waterloo, Canada. Working as Correction Officer, Government of Ontario, Canada. Package 80K Canadian dollars PA. Father Inspector in CISF. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Kundu, Dhanda, Bhoker. Contact: 7696873937
- Suitable match for Jat Boy (DOB 19.05.91) 34/5'9" Diploma and Degree in Electrical Engineering. Own business. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Nandal. Contact: 9417005229, 9872344990
- Suitable match for Jat Boy (DOB 19.05.96) 28 MBBS from PGI Rohtak. Father expired, retired from Army. Mother pensioner. Preferred MBBS girl. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Contact: 9468407521
- Suitable match for Jat Boy (DOB 10.12.99) 26/5'11" B. Tech. Computer Science from C.U., Self Business of Study Immigration at Chandigarh. Income Rs. one lakh per month. Parents both in Government Job. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Panwar. Contact: 9501005215, 9463187897
- Suitable match for Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/6feet B. Tech, CSE. Working as Senior Manager at Navartis Hyderabad. Total experience 7.5 years. Income Rs. 50-60 lakh per year. Father retired from Air Force. Mother home maker. Avoid Gotras: Lakra, Malik, Maan. Contact: 7989389447
- Suitable match for Jat Boy (DOB 21.02. 2000) 25/6'1" B. Tech. Civil engineering from PEC. Gold Medalist & President Awardee (2022 Batch) Employed in Central Government PSU Officer, Delhi/Gurugram. Father Asst. S.I. in Chandigarh Police. Mother home maker. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Gahlawat. Contact: 9417937113
- Suitable match for Jat Boy (DOB 25.08.96) 29/5'9" B. Tech, MA. Officer in Government bank. Father retired Sub-Inspector from Haryana Roadways. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Bamel, Narwal, Punia. Contact: 9467645319, 7696322587
- Suitable match for Jat Boy (DOB 10.12. 95) 30/5'10" B.Tech. Self employed in Chandigarh. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Lochab, Hooda, Dhankar. Contact: 8146991568
- Suitable match for Jat Boy (DOB 12.09.97) 28/5'7" B. Tech (CSE) LPU Jalandhar. I.T. Sector Hyderabad. Salary Rs. 27.30. LPA. Father Assist Director in Khadi & Village Industry at Ambala Cantt. Mother housewife. Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Contact: 8360153519, 7696046215.

# आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,<br>चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू


## सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

**सह–सम्पादक** : डा० राजवन्तीमान

**साज सज्जा एवं आमुख** : श्री आर. के. मलिक

**प्रकाशन समिति** : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

**वितरक** : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़



**जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़**

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870,M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332



Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

**RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।